thearyasamaj.org

ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष ६२ अंक ७ मार्च २०१५ चैत्र २०७१ वार्षिक मूल्य १०० रु०

पं. लेखराम आर्य पथिक
बलिदान ६ मार्च १८९७

शहीद भगतसिंह
२३ मार्च १९३१

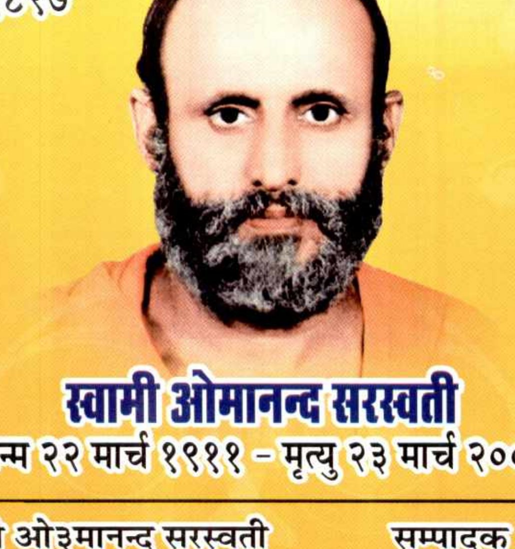

स्वामी ओमानन्द सरस्वती
जन्म २२ मार्च १९११ – मृत्यु २३ मार्च २००३

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
व्यवस्थापक : ब्र० राहुल आर्य

thearyasamaj.org

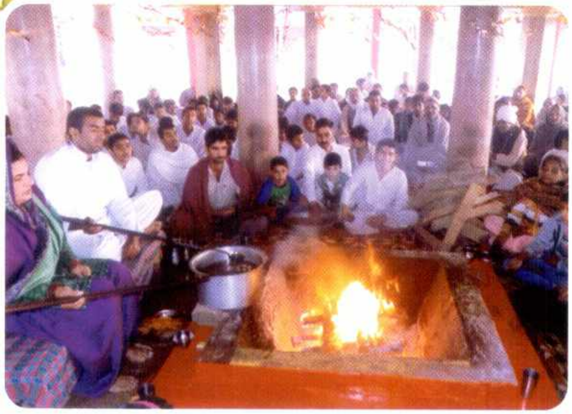

यजमान दम्पति यज्ञ करते हुए।

डॉ. योगानन्द शास्त्री चौ. वीरेन्द्रसिंह का स्वागत करते हुए।

आचार्य विजयपाल चौ. वीरेन्द्रसिंह का स्वागत करते हुए।

चौ. वीरेन्द्रसिंह को संग्रहालय दिखाते हुए विरजानन्द दैवकरणि।

चौ. वीरेन्द्रसिंह जनता को सम्बोधित करते हुए।

चौ. ओमप्रकाश धनखड़ का स्वागत करते हुए डॉ. सुरेन्द्रकुमार कुलपति, डॉ. योगानन्द शास्त्री।

thearyasamaj.org

चॉ. ओम्प्रकाश धनखड़ जनता को सम्बोधित करते हुए।

मल्लखम्भ पर स्तूप बनाते हुए ब्रह्मचारी।

आसनों से स्तूप बनाते हुए ब्रह्मचारी।

दण्ड लगाते हुए ब्रह्मचारी।

कमाण्डों की प्रक्रिया करते हुए ब्रह्मचारी।

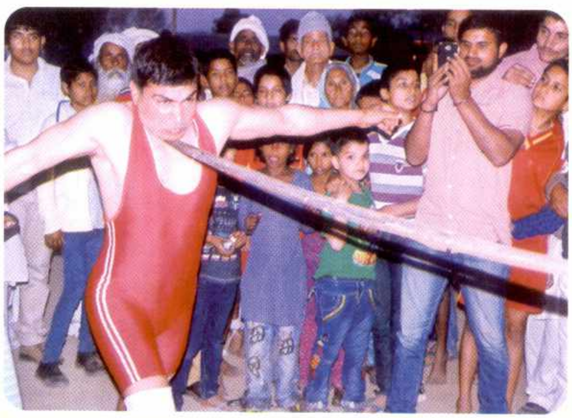

ब्र. नरेश शास्त्री गले से सरिया मोड़ते हुए।

thearyasamaj.org

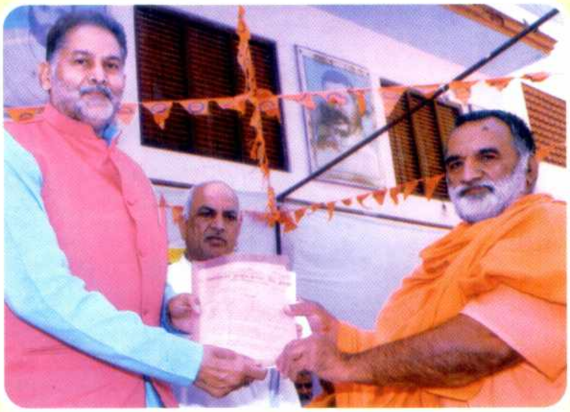

प्रो. रामविलास शर्मा को मांगपत्र देते हुए
आचार्य विजयपाल।

प्रो. रामविलास शर्मा संग्रहालय देखते हुए।

प्रो. रामविलास शर्मा का स्वागत करते हुए
श्री फतहसिंह भण्डारी।

प्रो. रामविलास शर्मा आचार्य बलदेवजी से
परामर्श करते हुए।

प्रो. रामविलास शर्मा जनता को
सम्बोधित करते हुए।

श्रीमती गीता भुक्कल और चौ. दीपेन्द्रसिंह हुड्डा का
स्वागत करते हुए ब्र. चाँदसिंह आर्य।

thearyasamaj.org

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क १५० रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क १५०० रुपये है।
2. यदि सुधारक २० तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा '**व्यवस्थापक सुधारक**' के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष : ६२ अंक : ७

मार्च २०१५ विक्रमाब्द २०७१

दयानन्दाब्द १९० कलिसंवत् ५११५

सृष्टिसंवत-१,९६,०८,५३,११५

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
१.	आर्याभिविनयः	२
२.	सम्पादकीय	३
३.	भारतीयों की पुत्रमोह की अन्धपरम्परा	५
४.	क्रोध का कारण और निवारण	६
५.	उत्सव समाचार	७
६.	अमरशहीद वीर भगतसिंह	९
७.	आर्यसमाज के भजनोपदेशक...	१२
८.	पण्डित लेखराम आर्यपथिक	१३
९.	आर्यसमाज का कायाकल्प	१८
१०.	समाचार प्रभाग	१३

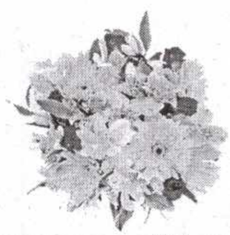

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

–व्यवस्थापक सुधारक

thearyasamaj.org

आर्याभिविनयः

स्तुति विषय

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे।
पृथिव्याः सप्त धामभिः ॥ ११ ॥

ऋ० १।२।१॥

व्याख्यान —हे (**देवाः**) विद्वानो! (**विष्णुः**) सर्वत्र व्यापक परमेश्वर ने सब जीवों को पाप तथा पुण्य का फल भोगने, और सब पदार्थों के स्थित होने के लिए, [(**पृथिव्याः**)] पृथिवी से लेके [(**सप्त**)] सप्तविध (**धामभिः**) धाम अर्थात् ऊंचे-नीचे सात प्रकार के लोकों को बनाया तथा गायत्र्यादि सात छन्दों से विस्तृत विद्यायुक्त वेद को भी बनाया। उन लोकों के साथ वर्तमान व्यापक ईश्वर ने (**यतः**) जिस सामर्थ्य से सब लोकों को रचा है, (**अतः**)=**सामर्थ्यात्**=उसी सामर्थ्य से हम लोगों की रक्षा करे। हे विद्वानो! तुम लोग भी उसी विष्णु के उपदेश से [(**नः अवन्तु**)] हमारी रक्षा करो। कैसा है वह विष्णु? जिसने इस सब जगत् को (**विचक्रमे**) विविध प्रकार से रचा है। उसकी नित्य भक्ति करो॥ ११ ॥

प्रार्थनाा-विषय

पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराव्णः।
पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठ्य॥ १२॥

ऋ० १।३।१०।५॥

व्याख्यान — हे [(**अग्ने**)] सर्वशत्रुदाहकाग्रे परमेश्वर! [(**रक्षसः**)] राक्षस हिंसाशील दुष्टस्वभाव देहधारियों से (**नः**) हमारी (**पाहि**) पालना करो और रक्षा करो। (**धूर्त्तेरराव्णः**) कृपण जो धूर्त्त उस मनुष्य से भी हमारी [(**पाहि**)] रक्षा करो। [(**रीषत उत वा जिघांसतः**)] जो हमको मारने लगे, तथा जो मारने की इच्छा करता है, [(**बृहद्भानो यविष्ठ्य**)] हे महातेजबलवत्तम! उन सबसे हमारी रक्षा करो॥ १२॥

स्तुति-विषय

त्वमस्य परे रजसो व्योमनः
स्वभूत्योजा अवसे धृषन्मनः।
चकृषे भूमिं प्रतिमानमोजसोऽपः
स्वःपरिभूरेष्या दिवम्॥ १०॥

ऋ० १।४।१४।२॥

व्याख्यान- हे परमैश्वर्यवन् परात्मन्! [(**रजसः व्योमनः पारे**)] आकाश लोक के पार में तथा भीतर [(**स्वभूत्योजा धृषन्मनः**)] अपने ऐश्वर्य और बल से विराजमान होके दुष्टों के मन को धर्षण=तिरस्कार करते हुए सब जगत् तथा विशेष हम लोगों के (**अवसे**) सम्यक् रक्षण के लिये (**त्वम्**) आप सावधान हो रहे हो। इससे हम निर्भय होके आनन्द कर रहे हैं। किञ्च (**दिवम्**) परमाकाश (**भूमिम्**) भूमि तथा (**स्वः**) सुखविशेष मध्यस्थ लोक इन सबों को [(**ओजसः**)] अपने सामर्थ्य से ही रच के यथावत् धारण कर रहे हो। (**परिभूः एषि**) सब के ऊपर वर्त्तमान और सबको प्राप्त हो रहे हो। (**आ दिवम्**) द्योतनात्मक सूर्यादिलोक (**अपः**) अन्तरिक्षलोक और जल इन सबके (**प्रतिमानम्**)= परिमाणकर्त्ता आप ही हो तथा आप अपरिमेय हो। कृपा करके हमको अपना तथा सृष्टि का विज्ञान दीजिये॥ १३॥

thearyasamaj.org

सम्पादकीय....

स्वामी ओमानन्द सरस्वती व्यक्ति अथवा संस्था समूह

गुरुकुल झज्जर के पुनरुद्धारक श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती (पूर्व आचार्य भगवान्‌देव) का जन्म नरेला (दिल्ली) के मामूरपुर पाना में चौ. कनकसिंह आर्य और श्रीमती नान्हीं देवी के घर में २२ मार्च १९११ को हुआ था। आर्यविचारधारा के संस्कार बाल्यकाल से ही मिलने के कारण कालेज में पढ़ते हुए भी वैदिक धर्म और देशसेवा के प्रति इनकी रुचि बढ़ती गई और सरदार भगतसिंह को जिस दिन फांसी हुई उसी समय से अंग्रेजी शासन के प्रति घृणा होगई और कालेज त्यागकर प्राचीन आर्षपद्धति के अनुसार शिक्षाप्राप्त करने का संकल्प लेकर श्रीमद् दयानन्द वेद-विद्यालय (यमुनाघाट, दिल्ली) गुरुकुल चित्तौड़गढ, गुरुकुल सिरसागंज (मैनपुरी) आदि में रहकर वेदवेदांगों का गूढ ज्ञान प्राप्त किया। गुरुकुल वृन्दावन में रहकर योगाभ्यास भी करते रहे।

इसी प्रकार आर्षज्ञानप्राप्त करते-करते महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज के प्रति अहर्निश श्रद्धाभाव वृद्धि प्राप्त होता रहा। सन् १९४२ में जीर्णशीर्ण अवस्थावाले गुरुकुल झज्जर को सम्भालकर इसे नवजीवन प्रदान किया और निरन्तर ६१ वर्ष तक इस कर्मभूमि की सेवा करते हुए २३ मार्च २००३ को स्वर्गीय हुए।

श्री स्वामी जी ने गुरुकुल झज्जर में रहते हुए जहां देश-विदेश में भी आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार भाषणों और साहित्यप्रचार के द्वारा किया वहां गुरुकुल झज्जर की चतुर्मुखी उन्नति करके इसे विश्वप्रसिद्धि के स्तर तक पहुंचा दिया।

गुरुकुल में ऋषिदयानन्द जी द्वारा निर्दिष्ट आर्षपाठविधि के माध्यम से सहस्रों छात्रों को शिक्षित-दीक्षित किया। ये शिष्य देश-विदेश तक भी संस्कृत, भारतीय संस्कृति आदि का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। प्राचीन लुप्त वैदिक साहित्य के पुनः प्रकाशन हेतु तथा समाजोत्थानार्थ नूतन उपयोगी साहित्य की रचना करके उसे हरयाणा साहित्य संस्थान नामक गुरुकुल के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित करवाकर लाखों लोगों का उपकार किया। आयुर्वेदिक औषधालय की स्थापना करके लाखों रुग्णव्यक्तियों को जीवन प्रदान किया। गोमाता के कष्टनिवारण हेतु गोशाला की स्थापना करके गोसेवा का लाभ प्राप्त किया और करवाया। जनता से निरन्तर सम्पर्क बनाये रखने के लिए सन् १९५३ से सुधारक नामक मासिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया जो आज तक निरन्तर प्रकाशित हो रहा है। देश की युवापीढी को चरित्रवान् और बलवान् बनाने के लिए स्कूल कालेजों में ब्रह्मचार्य शिक्षण शिविर का आयोजन करके सहस्रों युवकों को वास्तविक जीवन जीने की शैली से परिचित कराया और चरित्रनिर्माण हेतु सत्साहित्य के स्वाध्याय द्वारा भावी जीवन को भी सम्भालने हेतु सावधान किया।

अंग्रेजों ने भारत पर दीर्घकाल तक शासन करते रहने की योजना के अन्तर्गत भारत के प्राचीन इतिहास को दूषित रूप में प्रस्तुत करके जनमानस में यह भावना सुदृढ करने का घोर पुरुषार्थ किया कि प्राचीन भारतीयजन अनपढ़-मूर्ख और इतिहासज्ञान से शून्य थे। उनकी इस दुर्भावना को क्रियात्मकरूप से दूर करने के लिए स्वामी जी ने भारत के अनेक प्रान्तों में घूम-घूम कर प्राचीन भारत की लुप्त-गुप्त ऐतिहासिक सामग्री का संकलन करके सन् १९६० ई० में गुरुकुल में 'हरयाणा प्रान्तीय पुरातत्त्व संग्रहालय' की स्थापना की। इस संग्रहालय में प्राचीन मुद्रायें, मोहरें, प्रस्तर और मिट्टी की मूर्तियां,

thearyasamaj.org

मुद्रा ढालने के सांचे, ताम्रयुगीन शस्त्र-अस्त्र मणके पाण्डुलिपियां आदि विविध प्रकार की ऐतिहासिक सामग्री का संकलन किया गया है।

इस सामग्री के आधार पर जहां स्वामी जी ने अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की वहीं पर इनके शिष्य प्रशिष्यों ने इतिहास विषय को आधार बनाकर एम.ए, एम.फिल, पी-एच.डी. और डी.लिट् की उपाधियां प्राप्त की हैं। इसी प्रकार इस पुरातत्त्वसंग्रहालय की सामग्री के आधार पर सैकड़ों छात्र शोध करके भारतीय प्राचीन इतिहास के महत्त्व को जनता तक पहुंचाकर यश प्राप्त कर सकते हैं।

श्री स्वामीजी के केवल इसी एक कार्य की महत्ता को दृष्टिगत रखकर हरयाणा सरकार ने गुरुकुल झज्जर में स्वामीजी की स्मृति में संग्रहालय के नवीनभवन के निर्माण हेतु योजना प्रारम्भ करके स्वामी जी के प्रति आभार प्रकट करने का प्रयत्न किया है। जहां सरकार की ऐसी सद्भावना है वहीं कुछ निकृष्ट सोच के ऐसे व्यक्ति भी हैं जिनको संग्रहालय की यह वृद्धि पसन्द नहीं आ रही। ऐसे लोग श्री स्वामीजी से शिक्षा प्राप्त करके उनका आभार न मानकर कृतघ्नता के भागी बनने में, लज्जा अनुभव नहीं करते। रामायण में लिखा है-

गोघ्ने चैव सुरापे च चौरे भग्नव्रते तथा।
निष्कृतिर्विहिता सद्भिः कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः।।

जो व्यक्ति गोहत्या करदे, सुरापान करले, चोरी करले, ब्रह्मचर्यादि व्रत को भंग करदे उसके लिए भी प्रायश्चित्त का विधान है। परन्तु कृतघ्न व्यक्ति के लिए कोई प्रायश्चित्त नहीं है। कृतघ्न उसे कहते हैं जो किसी के किये हुए उपकार को न माने। ऐसे लोग वे ही हैं जो विषयवस्तु से सर्वथा अनिभज्ञ होते हुए भी केवल पदप्राप्ति और अर्थलोलुपता के लिए ही यत्नशील रहा करते हैं। ऐसे लोगों के लिए महाराज भतृहरि नीतिशतक में कहते हैं-

ये तु घ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे।

जो लोग व्यर्थ में ही उपकारी कार्यों में विघ्न डालते हैं, ऐसे लोगों को कोई नाम नहीं दिया जा सकता, अर्थात् स्वार्थी, असुर, राक्षस आदि नाम भी ऐसे लोगों के लिए उपयुक्त नहीं हैं। ऐसे व्यक्ति इन नामों से भी निकृष्ट नाम से अभिहित किये जाने वाले होते हैं, अर्थात् ऐसे लोगों को किस नाम से पुकारा जाये, यह हम नहीं जानते।

इन कार्यों के अतिरिक्त स्वामीजी ने अनेक सत्याग्रहों में भाग लिया तथा स्वयं सञ्चालन भी किया है। जैसे ----

१. हैदराबाद सत्याग्रह (सन् १९३९)
२. अंग्रेजो भारत छोड़ो आन्दोलन (सन् १९४२)
३. हिन्दीरक्षा सत्याग्रह (सन् १९५७)
४. गोरक्षासत्याग्रह (सन् १९६६-६७)
५. शराबबन्दी आन्दोलन (सन् १९६८)
६. कुण्डली हत्या निरोघ आन्दोलन (सन् १९६९)
७. चण्डीगढ़ आन्दोलन (सन् १९६९)

इन आन्दोलनों के द्वारा जनजागरण किया तथा सफलता प्राप्त की।

अतः स्वामी जी के जन्मदिन अथवा स्वर्गारोहण दिवस की स्मृति में उनको श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए उनके द्वारा निर्दिष्ट कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प लेना चाहिए। उनकी प्रशंसा में किये जानेवाले कार्यों में रुकावट डालने जैसा घृणित कार्य करके जनता में स्वयं को निन्दा का पात्र न बनने दें।

इस प्रकार स्वामी जी के कार्यों पर संक्षिप्त दृष्टिपात करते हुए उनके प्रति यही सच्ची श्रद्धांजलि है कि उनके कार्य को आगे बढ़ाया जाये। इसी में उनके प्रशंसकों, भक्तों, शिष्यों और अनुयायियों की शोभा है।

-विरजान्द दैवकरणि

thearyasamaj.org

भारतीयों की पुत्रमोह की अन्धपरम्परा

१. महाभारत के धृतराष्ट्र के युग से चली आरही पुत्रमोह की अन्धपरम्परा अपने देश में बराबर चली आ रही है। धृतराष्ट्र तो चक्षुविहीन था, पर हम भारतीय आँखें रहते हुए भी अपने पुत्रों के अवगुणों को जानते हुए भी अनजान बने रहकर उन्हें वे अधिकार सौंप देते हैं जिसके वे अधिकरी नहीं होते। परिणामस्वरूप अयोग्य पुत्रों के हाथों में आये अधिकार समाज तथा देश के लिए दूरगामी दुष्परिणाम का कारण बनते हैं।

२. पुत्रमोह की यह अन्धपरम्परा समाज के सामान्य लोगों में तो व्याप्त है ही, वर्तमान राजनीति भी इस रोग से ग्रस्त होकर बिना किसी अपवाद के निरन्तर चली आ रही है। पण्डित जवाहरलाल नेहरू, इन्दिरा गाँधी (पुत्र न था), राजीव गाँधी तथा राहुल गाँधी इसी कड़ी के उदारहण हैं। चौधरी चरणसिंह ने अपने पुत्र अजितसिंह को ही सबसे योग्य समझकर अपनी पार्टी की बागडोर सम्भलवा दी। जो भी पार्टी सत्ता के नजदीक दिखाई दी, उसका समर्थन करने में सभी सिद्धान्तों को तिलाञ्जलि देने में तनिक सा भी संकोच नहीं किया। काश्मीर से कन्याकुमारी तक यही प्रचलन दशाब्दियों से जारी है। नेशनल कान्फ्रेंस के शेख अब्दुल्ला, फारूख अब्दुल्ला तथा अभी उमर अब्दुल्ला इसी भारतीय परम्परा को निभाते चले आ रहे हैं।

आखिर पँजाब और हरयाणा ही क्यों अपवाद बनें। सर्वश्री प्रकाशसिंह बादल, उनके पुत्र सुखवीर बादल, अभयसिंह चोटाला, अजय चोटाला तथा अब चौथी पीढ़ी के वंशज दुष्यन्त चोटाला भी अपने कदम इसी पथ पर बढ़ा रहे हैं। उत्तरप्रदेश में समाजवादी पार्टी के तथाकथित लोहियावादियों को सबसे योग्य एक नवसिखिया मुलायमसिंह का पुत्र अखिलेश ही नजर आया। महाराष्ट्र में आदरणीय बाल ठाकरे जी इससे अछूते क्यों रहें? पुत्र उद्धव ठाकरे तथा भतीजे राज ठाकरे के बीच शिव सेना का सिंहासन सम्भाल न पाने का दुष्परिणाम पार्टी विभाजन हुआ।

योग्य पुत्र होता तो विभाजन की नौबत नहीं आने देता। अब भी अहंकार आड़े आकर भाजपा से २५ वर्ष पुराना सम्बन्ध तोड़ने में अपनी योग्यता सिद्ध कर रहे हैं। तमिलनाडु में भी करुणानिधि पुत्र स्टालिन को डी.एम.के. का सर्वश्रेष्ठ नेता मानते हैं।

कितने ही शक्तिशाली राजनीतिज्ञों के पुत्रों ने सत्ता का घृणित दुरुपयोग किया, इसकी सूचि बहुत लम्बी है। बलात्कार, हत्या, बड़े से बड़ी घूसखोरी के अपराधों में संलिप्त, अवैध हथियारों के मालिकों को मजाल कोई गिरफ्तार कर ले। और पकड़ भी ले तो क्या बिगाड़ लेंगे।

चाहे कोई प्रियदर्शनी मट्टू मरे या जेसिकालाल मरे। बी.एम.डब्लू. के नीचे कोई इन्सान कहलाने वाला कीड़ा-मकोड़ा मरे- धतृराष्ट्र दुर्योधनों पर कोई फर्क नहीं पड़ता। नवधनाढ्यों के साहिबजादे भी अपने चचेरे भाई राजनीतिज्ञों के पुत्रों से भला क्यों पीछे रहने लगे। उनकी गाड़ी के नीचे कोई गर्भवती क्षमा चोपड़ा मर जाये या कोई आवारा कुत्ता दोनों बराबर हैं। सिनेमा अभिनेता भी इसी श्रेणी के दूर या निकट के रिश्तेदार हैं?

आखिर कब यह महाभारत बन्द होगा? कब तक हम धृतराष्ट्र बनकर इन अयोग्य पुत्रों को दुर्योधन बनाकर महाभारत का बार-बार पुनर्लेखन करते रहेंगे।

टाइम्स ऑफ इण्डिया- २४ नवम्बर २०१४
सागरिका घोष के आधार पर कुछ
परिवर्तन सहित साभार

thearyasamaj.org

क्रोध का कारण और निवारण

कामनाओं की पूर्ति में बाधा पड़ने पर जो प्रकृति बनती है उसे क्रोध कहते हैं ? हमें क्रोध तभी आता है, जब वैसा न हो जैसा हम चाहते हैं। कामनाओं की पूर्ति में यदि किसी छोटे मनुष्य ने विघ्न डाला तो क्रोध उत्पन्न होता है। यदि किसी बराबर के मनुष्य ने विघ्न डाला तो भय होता है।

अहंकार से क्रोध उत्पन्न होता है। दूसरों के दोष देखने से यह बढता है। क्रोध में मन अप्रसन्न रहता है। मनुष्य न कहने योग्य कहता है, न करने योग्य कार्य करता है। क्रोध आने की स्थिति में शरीर में विकृति आती है; श्वास-प्रश्वास की गति बढ़ जाती है, नथुने फूल जाते हैं, शरीर कांपने लगता है; मन काबू में नहीं रहता है।

क्रोध अज्ञानता से आरम्भ होता है और पश्चात्ताप पर समाप्त होता है। क्रोध के समय मनुष्य मूढ होजाता है। उसके चित्त की स्वाभाविक पवित्रता, स्थिरता, सुखानुभूति, शान्ति और विचारशीलता नष्ट हो जाती है। पित्त कुपित होजाता है, जिससे सारा शरीर जलने लगता है। नसें कठोर होजाती हैं। वायु का वेग बढ़ जाने से चेहरा विकृत होजाता है। शरीर का तापमान बढ जाता है। हृदय की गति बढ़ जाती है और रक्त दूषित होजाता है। आशा, उत्साह एवं उल्लास दूर होजाता है। क्रोध से मानसिक तनाव पैदा होता है।

क्रोध से अज्ञान उत्पन्न होता है। विचारों की शक्ति नष्ट होजाती है; विचारों के नाश से आत्मिक शान्ति नष्ट होजाती है। क्रोध के कारण संघर्ष एवं कलह का वातावरण बनता है। घृणा, हिंसा व प्रतिरोध की भावना उत्पन्न होजाती है।

☆ अथर्ववेद में उल्लेख है- मा क्रुधः। अथर्व० ११/२/२० अर्थात् क्रोध मत करो। मधुमतीं वाचमुदेयम् अथर्व० १६/२/०२ अर्थात् सदा मधुर वचन बोले।

☆ मीठे और कोमल शब्दों से क्रोध सहज ही शान्त हो जाता है। क्रोध को नम्रता से परास्त करे।

☆ क्रोध करने पर शरीर गर्म हो जाता है, यह क्रोधाग्नि का प्रभाव है।

☆ इसलिए क्रोध करनेवाले को जब ठण्डा पानी पिलाते हैं तो उसे शान्ति का अनुभव होता है।

☆ विवेक, धैर्य और सहजभाव से काम लेकर उस कारण को ही दूर करना चाहिए जो क्रोध उत्पन्न कर रहा है। क्षमा करने से क्रोध निवृत्त होजाता है।

☆ शान्त स्वभाव के व्यक्तियों से सम्पर्क रखें।

☆ मौन रहने का अभ्यास करें।

☆ मिर्च, मसाले, मांस, अण्डे, शराब आदि तामसिक भोजन का त्याग करें। घी, दूध, फल आदि सत्विक आहार लेवें।

☆ क्रोध आने के स्थान से हटकर दूर चले जावें।

☆ सत्य, मधुर, हितकर बोलना चाहिए। नम्रता, प्यार, सत्कार का व्यवहार करना चाहिए।

☆ क्रोधी पुरुष को अनुनय विनय से समझाना चाहिए। डरे हुए लोगों को आश्वासन देना चाहिए।

☆ निर्बलों, असहायों, रोगियों, गुरूजनों, वृद्धों और बालकों पर तो कभी क्रोध नहीं करना चाहिए।

कृष्णादेवी शर्मा
ग्राम घटायन
मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)

thearyasamaj.org

उत्सव समाचार

२१-२२ फरवरी २०१५ को गुरुकुल झज्जर का पुनः ९९ वां वार्षिक महोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न होगया। इस उत्सव पर अथर्ववेदपारायण यज्ञ की पूर्णाहुति २२ फरवरी को प्रातः ९ बजे डॉ० धर्मपाल देशवाल के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुई। इस महोत्सव में २१ फरवरी को भारत के ग्रामीण विकासमन्त्री चौधरी वीरेन्द्रसिंह डूमरखां ने गुरुकुल के कुलपति डॉ० योगानन्द शास्त्री के साथ पुरातत्त्व संग्रहालय का मनोयोगपूर्वक निरीक्षण किया और अपने गृहक्षेत्र से प्राप्त रामायण के पात्रों दृश्यवाली मृन्मूर्तियों की विशेषरूप से जिज्ञासा और प्रशंसा की। मन्त्री जी ने अपने उद्बोधन में गुरुकुलीय शिक्षाप्रणाली की प्रंशसा करते हुए दस लाख रुपये की आर्थिक सहायता करने की घोषणा भी की।

इसी भांति हरियाणा के कृषिमन्त्री श्री ओम्प्रकाश धनखड़ ने गुरुकुलपद्धति का महत्त्व बताते हुए अपने विभाग से दस लाख रुपये प्रदान करने का वचन दिया। तदनन्तर श्री कन्हैयालाल आर्य गुड़गांवा के प्रयत्न से श्री श्रवणकुमार गुड़गांवा ने दस हजार रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लिया। इसी समय डॉ० धर्मवीर जी कार्यकारी प्रधान परोपकारिणी सभा अजमेर ने आर्षपाठविधि के महत्त्व और उसके लाभ विषय पर सारगर्भित विशेष प्रवचन किया। इसी भांति उसी दिन डॉ० सुरेन्द्रकुमार कुलपति गुरुकुलकांगड़ी विश्वविद्यालय (हरद्वार), स्वामी कर्मपाल, अध्यक्ष सर्वखाप पंचायत, आचार्य यशःपाल उपप्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री सत्यवीर शास्त्री पूर्वमन्त्री, आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा, ने भी अपने प्रवचनों से श्रोताओं को तृप्त किया।

२१ फरवरी को सायंकाल ४ से साढे ६ बजे तक स्वामी देवव्रत जी प्रधान सार्वदेशिक आर्यवीर दल तथा ब्र. चांदसिंह आर्य के नेतृत्व में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने विविध प्रकार के व्यायामों का अद्भुत प्रदर्शन किया, जैसे जिम्नास्टिक, लाठी, भाला, तलवार के खेल, कराटे, बाक्सिंग, कलरी, मल्लखम्भ, डम्बल, लेजियम, स्तूप, कमाण्डो के कर्त्तव्य, मोगरी और गले से सरिये मोड़ना आदि। डॉ० राजपाल (रोहतक) ने व्यायामप्रदर्शन के समय व्यायामा के लाभ बताये।

सायंकाल ८ बजे गुरुकुल झज्जर के लगभग ६० स्नातकों ने अपने पुराने स्नातकमण्डल को पुनर्जीवित करने का संकल्प लिया और अगले वर्ष गुरुकुल स्थापना के निमित्त मनाये जानेवाले शताब्दी समारोह को विशेष उत्साह से मनाने का निर्णय लिया। साथ ही स्नातक परिचय के प्रकाशन तथा गुरुकुल के शतवर्षीय इतिहास के प्रकाशन में भी योगदान देने में सम्मति प्रदान की। स्नातक मण्डल के नये प्रधान का पद श्री महादेव शास्त्री (बोहर) को, मान्त्रीपद श्री सत्यवीर शास्त्री प्रेरक को, उपमन्त्री का पद श्री रामवीर शास्त्री (बालन्द) को तथा कोषाध्यक्ष का पद श्री सुजीत शास्त्री (मीत्ताथल) को दिया गया।

इसके पश्चात् गुरुकुल की प्रबन्धकारिणी विद्यार्यसभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन प्रधान चौ० पूर्णसिंह देशवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

२२ फरवरी को प्रो० रामविलास जी शर्मा शिक्षा-पुरातत्त्व-परिवहन आदि हरियाणा सरकार के अनेक विभागों के मन्त्री गुरुकुल में पधारे और पुरातत्त्वसंग्रहालय का सूक्ष्मता से निरीक्षण किया तथा अपने उद्बोधन में संस्कृतभाषा और गुरुकुलीय शिक्षापद्धति का महत्त्व बताते हुए गुरुकुल के छात्रावास हेतु १५ लाख रुपये का अनुदान देने की घोषणा के साथ यह भी कहा कि हरयाणा सरकार

thearyasamaj.org

स्वामी ओमानन्द जी के नाम से बनाये जाने वाले संग्रहालय के नये भवन को आधुनिक तरीके से तैयार करवायेगी और उस पर तीन-चार करोड़ रुपये जो भी लगेंगे उसका वहन सरकार करेगी तथा संग्रहालय समिति के नाम भूमि के पंजीकरण पर होने वाली स्टाम्पड्यूटी १३ लाख रुपये भी सरकार ही देगी।

तदनन्तर झज्जर की विधायिका श्रीमती गीता भुक्कल ने भी जनता को सम्बोधित किया तथा रोहतक के सांसद श्री दीपेन्द्रसिंह हुड्डा ने अपना वक्तव्य देकर ५ लाख का अनुदान देने का वचन दिया। इस अवसर पर प्रतिवर्ष की भांति स्वामी ओमानन्द जी के नाम से पन्द्रह हजार रुपये, प्रशस्तिपत्र तथा शाल देकर स्वामी ओमानन्द सरस्वती विद्वत्पुरस्कार डॉ० सुरेन्द्रकुमार (महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक) को, आर्यभजनोपदेशक पुरस्कार पं० सत्यपाल पथिक (अमृतसर) को तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारी पुरस्कार डॉ० कुंजदेव मनीषी (गुरुकुल आमसेना, उड़ीसा) को प्रदान किया गया। इसी दिन स्वामी सुमेधान्द जी सांसद, स्वामी देवव्रत जी, स्वामी प्रणवानन्द जी (गुरुकुल गौतमनगर), स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी (गुरुकुल पूठ गाजियाबाद) डॉ० सुधीरकुमार (जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली) डॉ० बलवीर आचार्य (रोहतक) तथा डॉ० जय भारती (पंचकूला) ने भी श्रोताओं को अपने उपदेशामृत से आह्लादित किया।

उत्सव पर पधारनेवाले सभी राजनेताओं के सम्मुख गुरुकुल की समस्याओं और आवश्यकताओं का वर्णन करते हुए आचार्य विजयपाल जी ने अपने मांगपत्रों द्वारा गुरुकुल की अधिक से अधिक सहायता करने के लिए निवेदन किया, फलस्वरूप सभी ने यथाशक्ति धनराशि देने की घोषणा भी की, जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है। आचार्य बलदेव जी अस्वस्थ होते हुए भी उत्सव के दोनों दिन अपनी उपस्थिति बनाये रहे।

उत्सव की समाप्ति पर आचार्य विजयपाल जी ने सभी राजनेताओं, विद्वानों तथा श्रोताओं को धन्यवाद देकर अगले वर्ष पुन: पधारने का निमन्त्रण भी दिया तथा कहा कि यदि किसी सज्जन को किसी प्रकार की असुविधा हुई हो तो हम क्षमाप्रार्थी हैं और आगे से ध्यान देकर अपनी त्रुटि को दूर करने का प्रयास करेंगे।

उत्सव के समय मञ्चसंचालन का कार्य श्री राजवीरसिंह छिकारा, मंत्री गुरुकुल झज्जर ने किया। अभ्यागतों के भोजन की व्यवस्था श्री अशोककुमार शास्त्री और श्री नन्दलाल शास्त्री ने विशेष परिश्रमपूर्वक की।

इस उत्सव में लगभग ढाई हजार दर्शकों ने पुरात्त्व संग्रहालय को देखकर अपने ज्ञान में वृद्धि करने का अवसर प्राप्त किया।

जैसे इस महोत्सव में राजनेताओं द्वारा अनुदानराशि देने की घोषणा की वैसे ही **चौ० पूर्णसिंह देशवाल (भदानी) ने २१,००० रुपये, हैडमास्टर हवासिंह प्रधान आर्यसमाज कबलाना ने ११,१११ रुपये, आर्यसमाज रोहणा ने ११,००० रुपये, आर्यसमाज मतलौढा ने ११,००० रुपये तथा स्वामी योगानद जी ने यज्ञार्थ १०,००० रुपये दान दिये। श्री राव धर्मपाल सिंह धर्म पैलेस (झज्जर) ने १५,०००, बिट्टू जैन (सुनील) झज्जर ने ११,००० रुपये श्री राव अजीतसिंह झज्जर नें ११,००० रुपये, श्री बलजीतसिंह खूडन ने ११,००० रुपये, श्री जसवन्तसिंह देशवाल झज्जर ने ११,००० रुपये दान दिये।**

प्रस्तुत कर्त्ता -
विरजानन्द दैवकरणि

thearyasamaj.org

अमरशहीद वीर भगतसिंह

O राहुल आर्य

भगतसिंह (जन्म: २८ सितम्बर १९०७, मृत्यु: २३ मार्च १९३१) भारत के एक प्रमुखस्वतंत्रतासेनानी थे। भगतसिंह ने देश की आजादी के लिए जिस साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया, वह आज के युवकों के लिए एक बहुत बड़ा आदर्श है। इन्होंने केन्द्रीय संसद (सेंट्रल असेम्बली) में बम फेंककर भी भागने से मनाकर दिया। जिसके फलस्वरूप इन्हें २३ मार्च १९३१ को इनके दो अन्य साथियों, राजगुरु और सुखदेव के साथं फाँसी पर लटका दिया गया। सारे देश ने उनके बलिदान को बड़ी गम्भीरता से याद किया। पहले लाहौर में सांडर्स-वध और उसके बाद दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली में चन्द्रशेखर आजाद व पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ बम-विस्फोट करके ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध खुले विद्रोह को बुलन्दी प्रदान की। इन सभी बम धमाकों के लिए उन्होंने वीर सावरकर के क्रांतिदल अभिनव भारत की भी सहायता ली और इसी दल से बम बनाने के गुर सीखे।

जन्म और परिवेश

भगतसिंह का जन्म २८ सितम्बर १९०७ में हुआ था। उनके पिता का नाम सरदार किशनसिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था। यह एक सिख परिवार था जिसने आर्यसमाज के विचार को अपना लिया था। उनके परिवार पर आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द की विचारधारा का गहरा प्रभाव था। अधिकांश क्रांतिकारियों को देश प्रेम की प्रेरणा महर्षि दयानन्द के साहित्य व आर्यसमाज से मिली। अमृतसर में १३ अप्रैल १९११ को हुए जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड ने भगतसिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डालाा था। लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर भगतसिंह ने भारत की आजादी के लिये नौजवान भारत सभा की स्थापना की थी। काकोरी काण्ड में रामप्रसाद बिस्मिल सहित ४ क्रांतिकारियों को फाँसी व १६ अन्य के कारावास की सजाओं से भगतसिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि पण्डित चन्द्रशेखर आजाद के साथ उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन से जुड़ गये और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपल्किन एसोसिएशन। इस संगठन का उद्देश्य सेवा, त्याग और पीड़ा झेल सकनेवाले नवयुवक तैयार करना था। भगतसिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर १७ दिसम्बर १९२८ को लाहौर के सहायक पुलिस अधीक्षक अंग्रेज अधिकारी जे.पी. सांडर्स के मारा था। इस कार्रवाई में क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद ने उनकी पूरी सहायता की थी। क्रांतिकारी साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर भगतसिंह ने वर्तमान नई दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेंट्रल एसेम्बली के सभागार संसद भवन में ८ अप्रैल १९२९ को अंग्रेज सरकार को जगाने के लिए बम और पर्चे फेंके थे। बम फेंकने के बाद वहीं पर दोनों ने अपनी गिरफ्तारी भी दी।

क्रांतिकारी गतिविधियाँ

जब जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ था। उस समय भगतसिंह करीब १२ वर्ष के थे। इसकी सूचना मिलते ही भगतसिंह अपने स्कूल से १२ मील पैदल चलकर जलियाँवाला बाग पहुंच गये। इस उम्र में भगतसिंह अपने चाचाओं की क्रान्तिकारी किताबें पढ़कर सोचते थे कि इनका

thearyasamaj.org

रास्ता सही है कि नहीं? गांधी जी का असहयोग आन्दोलन छिड़ने के बाद वे गांधी जी के अहिंसात्मक तरीकों और क्रान्तिकारियों के हिंसक आन्दोलन में से अपने लिए रास्ता चुनने लगे। गांधी जी के असहयोग आन्दोलन को रद्द कर देने के कारण देश के तमाम नवयुवकों की भाँति उनमें भी रोष हुआ और अन्ततः उन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए क्रान्ति का मार्ग अपनाना अनुचित नहीं समझा। उन्होंने जुलूसों से भाग लेना प्रारम्भ किया तथा कई क्रान्तिकारी दलों के सदस्य बने। कुछ समय बाद भगतसिंह करतारसिंह साराभा के संपर्क में आये जिन्होंने भगतसिंह को क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होने की सलाह दी और साथ ही वीर सावरकर की किताब १८५७ प्रथम स्वतंत्रता संग्राम पढ़ने के लिए दी, भगतसिंह इस किताब से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने इस किताब के बाकी संस्करण भी छापने के लिए सहायता प्रदान की, जून १९२७ में भगतसिंह वीर सावरकर से येरवदा जेल में मिले और क्रांति की पहली गुरुशिक्षा ग्रहण की, यहीं से भगतसिंह के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया, उन्होंने सावरकर जी के कहने पर आजाद जी से मुलाकात की और उनके दल में शामिल हुए। बाद में वे अपने दल के प्रमुख क्रांतिकारियों के प्रतिनिधि भी बने। उनके दल के प्रमुख क्रांतिकारियों में चन्द्रशेखर आजाद, भगवतीचरण बोहरा, सुखदेव, राजगुरु इत्यादि थे।

लाला जी की मृत्यु का प्रतिशोध

१९२८ में साइमन कमीशन के बहिष्कार के लिये भयानक प्रदर्शन हुए। इन प्रदर्शनों में भाग लेनेवालों पर अंग्रेजी शासन ने लाठीचार्ज भी किया। इसी लाठीचार्ज से आहत होकर लाला लाजपतराय की मृत्यु हो गयी। अब इनसे रहा न गया। एक गुप्त योजना के तहत इन्होंने पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट स्काट को मारने की योजना सोची। सोची गयी योजना के अनुसार भगतसिंह और राजगुरु लाहौर कोतवाली के सामने टहलने लगे।

उधर जयगोपाल अपनी साईकिल को लेकर ऐसे बैठ गये जैसे कि वो खराब हो गयी हो। गोपाल के इशारे पर दोनों सचेत हो गये। उधर चन्द्रशेखर आजाद पास के डी.ए.वी. स्कूल की चारदीवारी के पास छिपकर घटना को अंजाम देने में रक्षक का काम कर रहे थे।

१७ दिसम्बर १९२८ को करीब सवा चार बजे, स्काट की जगह, ए.एस.पी. सांडर्स के आते ही राजगुरु ने एक गोली सीधी उसके सर में मारी जिसके तुरन्त बाद वह होश खो बैठा। इसके बाद भगतसिंह ने ३-४ गोली दाग कर उसके मरने का पूरा इन्तजाम कर दिया। ये दोनों जैसे ही भाग रहे थे कि एक सिपाही चननसिंह ने इनका पीछा करना शुरू कर दिया। चन्द्रशेखर आजाद ने उसे सावधान किया - "आगे बढ़े तो गोली मार दूंगा।" नहीं मानने पर आजाद ने उसे गोली मार दी। इस तरह इन लोगों ने लाला लाजपतराय की मौत का बदला ले लिया।

एसेम्बली में बम फेंकना

भगतसिंह यद्यपि रक्तपात के पक्षधर नहीं थे परन्तु वे काल मार्क्स के सिद्धान्तों से पूरी तरह प्रभावित थे। यही नहीं, वे समाजवाद के पक्के पोषक भी थे। इसी कारण से उन्हें पूंजीपतियों की मजदूरों के प्रति शोषण की नीति पसन्द नहीं आती थी। उस समय चूँकि अंग्रेज ही सर्वेसर्वा थे तथा बहुत कम भारतीय उद्योगपति उन्नति कर पाये थे, अतः अंग्रेजों

thearyasamaj.org

के मजदूरों के प्रति अत्याचार से उनका विरोध स्वाभाविक था। मजदूर विरोधी ऐसी नीतियों को ब्रिटिश संसद में पारित न होने देना उनके दल का निर्णय था। सभी चाहते थे कि अंग्रेजों को पता चलना चाहिए कि हिन्दुस्तानी जाग चुके हैं और उनके हृदय में ऐसी नीतियों के प्रति आक्रोश है। ऐसा करने के लिये ही उन्होंने दिल्ली की केन्द्रीय एसेम्बली में बम फेंकने की योजना बनायी थी।

भगतसिंह चाहते थे कि इसमें कोई खून खराबा न हो और अंग्रेजों तक उनकी 'आवाज' भी पहुंचे। हालाँकि प्रारम्भ में उनके दल के सब लोग ऐसा नहीं सोचते थे पर अन्त में सर्वसम्मति से भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त का नाम चुना गया। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ८ अप्रैल १९२९ को केन्द्रीय असेम्बली में इन दोनों ने एक ऐसे स्थान पर बम फेंका जहाँ कोई मौजूद न था, अन्यथा उसे चोट लग सकती थी। पूरा हाल धुएं से भर गया। भगतसिंह चाहते तो भाग भी सकते थे पर उन्होंने पहले ही सोच रखा था कि उन्हें दण्ड स्वीकार है चाहे वह फाँसी ही क्यों न हो, अत: उन्होंने भागने से मना कर दिया। उस समय वे दोनों खाकी कमीज तथा निकर पहने हुए थे। बम फटने के बाद उन्होंने "इंकलाब!-जिन्दाबाद!! साम्राज्यवाद!-मुर्दाबाद!!" का नारा लगाया और अपने साथ लाये हुए पर्चे हवा में उछाल दिये। इसके कुछ ही देर बाद पुलिस आ गयी और दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया।

जेल के दिन

जेल में भगतसिंह करीब २ साल रहे। इस दौरान वे लेख लिखकर अपने क्रान्तिकारी विचार व्यक्त करते रहे। जेल में रहते हुए उनका अध्ययन बराबर जारी रहा। उनके उस दौरान लिखे गये लेख व सगे सम्बन्धियों को लिखे गये पत्र आज भी उनके विचारों के दर्पण हैं। अपने लेखों में उन्होंने कई तरह से पूंजीपतियों को अपना शत्रु बताया है। उन्होंने लिखा कि मजदूरों का शोषण करने वाला चाहे एक भारतीय ही क्यों न हो, वह उनका शत्रु है। जेल में भगतसिंह व उनके साथियों ने ६४ दिनों तक भूख हड़ताल की। उनके एक साथी यतीन्द्रनाथ दास ने तो भूख हड़ताल में अपने प्राण ही त्याग दिये थे।

फाँसी

२३ मार्च १९३१ को शाम में करीब ७ बजकर ३३ मिनट पर भगतसिंह तथा इनके दो साथियों सुखदेव व राजगुरु को फाँसी दे दी गई। फाँसी पर जाने से पहले वे पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' की जीवनी पढ़ रहे थे जो सिन्ध (वर्तमान पाकिस्तान का एक सूबा) के एक प्रकाशक भजनलाल बुकसेलर ने आर्ट प्रेस, सिन्ध से छापी थी। कहा जाता है कि जेल के अधिकारियों ने जब उन्हें यह सूचना दी कि उनके फाँसी का वक्त आगया है तो उन्होंने कहा था- "ठहरिये! पहले एक क्रान्तिकारी दूसरे से मिल तो ले।" फिर एक मिनट बाद किताब छत की ओर उछाल कर बोल-"ठीक है अब चलो।"

फाँसी पर जाते समय वे तीनों मस्ती से गा रहे थे-

मेरा रँग दे बसन्ती चोला, मेरा रँग दे,
मेरा रँग दे बसन्ती चोला। माय रँग दे बसन्ती चोला॥

फाँसी के बाद कहीं कोई आन्दोलन न भड़क जाये इसके डर से अंग्रेजों ने पहले इनके मृत शरीर के टुकड़े किये फिर इसे बोरियों में भरकर फिरोजपुर की ओर ले गये जहाँ घी के बदले मिट्टी का तेल डालकर ही इनको जलाया जाने लगा। गाँव के लोगों ने आग जलती देखी तो

thearyasamaj.org

करीब आये। इससे डरकर अंग्रेजों ने इनकी लाश के अधजले टुकड़ों को सतलुज नदी में फेंका और भाग गये। जब गाँव वाले पास आये तब उन्होंने इनके मृत शरीर के टुकड़ों को एकत्रित कर विधिवत् दाह संस्कार किया और भगतसिंह हमेशा के लिए अमर हो गये। इसके बाद लोग अंग्रेजों के साथ-साथ गांधी को भी इनकी मौत का जिम्मेवार समझने लगे। इस कारण जब गांधी कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में हिस्सा लेने जा रहे थे तो लोगों ने काले झण्डों के साथ गांधी जी का स्वागत किया। एकाध जगह पर गांधी पर हमला भी हुआ, किन्तु सादी वर्दी में उनके साथ चल रही पुलिस ने बचा लिया।

पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' ने अपनी आत्मकथा में जो-जो दिशा-निर्देश दिये थे, भगतसिंह ने उनका अक्षरश: पालन किया। उन्होंने अंग्रेज सरकार को एक पत्र भी लिखा, जिसमें कहा गया था कि उन्हें अंग्रेजी सरकार के खिलाफ भारतीयों के युद्ध का प्रतीक एक युद्धबन्दी समझा जाये तथा फाँसी देने के बजाय गोली से उड़ा दिया जाये। फाँसी के पहले ३ मार्च को अपने भाई कुलतार को भेजे एक पत्र में भगतसिंह ने लिखा था -

उन्हें यह फिक्र है हरदम, नयी तर्ज-ए-जफा क्या है?
हमें यह शौक है देखें, सितम की इन्तहा क्या है?
दहर से क्यों खफा रहें, चर्ख का क्या गिला करें।
सारा जहाँ अदू सही, आओ! मुकाबला करें॥

इन जोशीली पंक्तियों से उनके शौर्य का अनुमान लगाया जा सकता है। चन्द्रशेखर आजाद से पहली मुलाकात के समय जलती हुई मोमबत्ती पर हाथ रखकर उन्होंने कसम खायी थी कि उनकी जिन्दगी देश पर ही कुर्बान होगी और उन्होंने अपनी वह कसम पूरी कर दिखायी।

आर्यसमाज के भजनोपदेशक जिन्हें हम भूल न जायें

O डॉ. भवानीलाल भारतीय

प्रज्ञाचक्षु दादा बस्तीराम और उनकी जगत्कर्त्ता परमात्मा की स्तुति

११६ वर्ष की परिपक्व आयु भोगकर २६ अगस्त १९५८ को ग्राम बराणी (झज्जर) में दिवंगत हुए दादा बस्तीराम यद्यपि नेत्रहीन थे तथापि उन्हें आत्मज्ञान प्राप्त था। इसलिए उन्होंने ऋषि दयानन्द के प्रवचनों को सुनकर वैदिक धर्म प्रचारक बनने का निश्चय किया और सम्पूर्ण जीवन खंजरी पर गा गाकर धर्म प्रचार करते रहे। लोक गायकी में माहिर दादा बस्तीराम को सैद्धान्तिक ज्ञान तो था ही वे काव्यरचना के शास्त्रीय नियमों से भी अनभिज्ञ नहीं थे। यही कारण है कि उस युग में उनकी रचनाएं घर घर में गाई और सुनी जाती थीं। उनके भजनों के अनेक संग्रह हरयाणा साहित्य संस्थान (गुरुकुल झज्जर) और आचार्य प्रकाशन रोहतक ने प्रकाशित किये हैं।

उनका प्रसिद्ध भजन 'धन धन तेरी कारीगरी' दार्शनिकता की झलक अपने भीतर समाये है। कवि का पूछना है कि यदि बिना किसी भौतिक साधन के परमात्मा विश्व का सृजन कर सकता है तो यह उसकी अद्वितीय कारीगरी है-

धन धन तेरी कारीगरी करतार।

जब निर्विकार और निराकार (तब) साकार बना दिया जग कैसे?

विविध रूपा प्रकृति का आधार लेने में भी तेरी चतुराई है-

thearyasamaj.org

किये रंग-बिरंगे फूल और बादल रंग की रैणी (कलम) कहीं नहीं?

दादा बस्तीराम के व्यक्तित्व और कृतित्व से सबको परिचित होना चाहिए।

राजस्थान के आद्य (प्रथम) भजनोपदेशक - पं० कालूराम रामगढ़ वाले

रामगढ़ (सीकर) निवासी पं० कालूराम को प्रथम आर्य उपदेशक (राजस्थान) कह सकते हैं। वे १८३६ में जन्मे और १९०० में दिवंगत हुए। उन्होंने स्वप्न में ऋषि दयानन्द का उपदेश सुना और वैदिक धर्म का प्रचार करने का आदेश पाया। तब से वे राजस्थानी में भजन रचनाकर विभिन्न स्थानों पर धर्म प्रचार करते। मानव जीवन की क्षणभंगुरता पर उनका निम्न भजन मेरी परदादी (फतहपुर शेखावाटी) उसका नैहर था, को याद था। उनके पुत्र देवीलाल जी (पितामह के अनुज) को शायद यह भजन उनकी माता ने सिखाया होगा। इन पितामह के मुख से हमने इसे कई बार सुना। यह भावना पूर्ण भजन मानव जीवन की नश्वरता का यथार्थ चित्र है—

मनवा नहीं बिचारी रे। लोभी नहीं बिचारी रे।
थोरी म्हारी करता ऊमर बीती सारी रे।
नव दस मास गरभ में राख्यो माता थारी रे।
अब तो बाहर काढ भगती करसूं थारी रे।
बालपना तो खेलकूद में बीत्यो सारी रे।
जवानी रे जोर तिरिया लागे प्यारी रे।

अन्तिम - कालूराम गुरां रे सरणे सुधरी सारी रे। पं० (महत्मा) कालूराम की स्मृति में एक विशााल मेला लगता है। इस स्थान पर एक कीर्ति स्तम्भ स्वयं महात्मा जी द्वारा निर्मित ऊंचा तथा स्थापत्य का अद्वितीय नमूना है। उनके निधन की १००वीं जयन्ती जब स्वामी सुमेधानन्द जी (सांसद) की अध्यक्षता में मनाई गई थी। इन पंक्तियों के लेखक ने महात्मा जी के व्यक्तित्व पर विस्तृत परिचय प्रस्तुत किया था। भारत के भूतपूर्व आडिटर जनरल तथा नियंत्रक सी.ए.जी. तथा कर्नाटक के भूतपूर्व राज्यपाल श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी समारोह के मुख्य अतिथि थे।

कु० सुखलाल आर्य मुसाफिर की राष्ट्र उद्‌बोधनकारी गजलें, भजन

नई पीढ़ी के लोग कु० सुखलाल तथा उनकी राष्ट्र एवं धर्म को पुनरुज्जीवित करनेवाली सरल उर्दू की गजलों और शुद्ध हिन्दी में रचे भजनों को भूल गये हैं। बुलन्द शहर जिले के अरनियां ग्राम में १८९० में जन्मे कु० सुखलाल ने आगरा के मुसाफिर विद्यालय में उपदेशक का प्रशिक्षण प्राप्त किया, आर्य मुसाफिर उपधि प्राप्त की और पठानी प्रान्त उत्तर पश्चिम सीमान्त प्रान्त में प्रचारार्थ चले गये। अवस्था शायद १८ की रही होगी। किसी आपत्तिजनक समझे गये वाक्य के कारण जब मैजिस्ट्रेट ने पूछा - इतने दूर संयुक्त प्रान्त (यू.पी.) से धर्म के प्रचारार्थ यहां खूंखार पठानों के प्रदेश में क्यों आये? क्या वहां वैदिक धर्म का प्रचार नहीं कर सकते थे? उत्तर में निर्भीक आर्य उपदेशक का उत्तर था- यदि आप हजारों मील का सफर कर यहां हमारे देश पर शासन करने आ सकते हैं तो मैं अपने ही देश के इस प्रान्त में स्वधर्म प्रचारार्थ क्यों नहीं आ सकता? समझदार अंग्रेज दण्डनायक ने नौजवान आर्य से आगे बहस नहीं की।

इन्हीं सुखालाल को राष्ट्रीय भावों से ओत-प्रोत प्रवचनों को किसी मंच पर सुनकर महात्मा जी ने मध्यप्रदेश विधानसभा के स्पीकर श्री घनश्यामसिंह गुप्त से पूछा था-गुप्ताजी, यह आपका सुखलाल तो

thearyasamaj.org

कमाल का बोलता है। सुखलाल जी स्वतंत्रता आन्दोलन में कारावास भोग चुके थे। मुझे उनके भजन-प्रवचन सुनने क सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। प्रारम्भ में वे एक ईश्वर भजन से अपना प्रवचन आरम्भ करने और उसके पश्चात् उनका धाराप्रवाह ओजस्वी भाषण हो जाता जो अस्खलित वाणी में घण्टे-डेढ़ घण्टे तक चलता और श्रोता मंत्रमुग्ध होकर सुनते। तभी तो यह प्रसिद्ध था कि आर्यसमाज (बच्छोवाली तथा अनारकली) लाहौर के मंत्री को जनता से कहना पड़ता-अन्त में कु. सुखलाल के भजन होंगे। इस कथनमात्र से सुनने वाले सभा समाप्त होने तक, चाहे रात के १२ ही क्यों न बज जाये। सभा का त्याग नहीं करते।

अब सुधा तुल्य अमृतवर्षा करने वाले कु. साहब की कुछ मार्मिक उक्तियां सुनें-

खिदमते धरम (वतन) में जो कि मर जायेंगे।
वो अमर नाम अपना दुनिया में कर जायेंगे।
न ये पूछो कि मरकर किधर जायेंगे।
वो जिधर भेज देगा उधर जायेंगे।

(क्योंकि परमात्मा की न्याय व्यवस्था में पूरा यकीन है)

शुद्धि आन्दोलन से घबराये तरस्सुबी मुल्ला-मौलवियों को लक्ष्य कर आप दिखला रहे हैं किसे तुर्शियां, गरम क्यों हो रहे हैं-मौलाना ये नशे वे नहीं जो उतर जायेंगे।

हिन्दुओं अब क्या कर्त्तव्य है-

दीन दुखियों को छाती लगा लो अभी,
वर्ना ये लाल गैरों के घर जायेंगे।

और अन्त में आप मानें न मानें खुशी आपकी।

हम 'मुसाफिर' हैं कुल अपने घर जायेंगे।

बलिदानियों को श्रद्धांजलि —

शीश जिनके धरम पर चढ़े हैं।
झण्डे दुनिया में उनके गड़े हैं।

३/५ शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

अमर शहीद............

पण्डित लेखराम आर्यपथिक

O नन्दलाल शास्त्री

पंडित लेखराम आर्यपथिक (१८५८-१८९७) **आर्यसमाज** के प्रमुख कार्यकर्ता एवं प्रचारक थे। उन्होंने अपना सारा जीवन आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में लगा दिया। वे अहमदिया मुस्लिम समुदाय के नेता मिर्जा गुलाम अहमद से शास्त्रार्थ एवं उसके दुष्प्रचारों के खण्डन के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। उनका संदेश था कि तहरीर (लेखन) और तकरीर (शास्त्रार्थ) का काम बंद नहीं होना चाहिए। पंडित लेखराम इतिहास की उन महान् हस्तियों में शामिल हैं जिन्होंने **धर्म** की बलिवेदी पर प्राण न्योछावर कर दिए। जीवन के अंतिम क्षण तक आप वैदिक धर्म की रक्षा में लगे रहे। पंडित लेखराम ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए हिंदुओं को धर्म परिवर्तन से रोका व शुद्धि अभियान के प्रणेता बने।

पं० लेखराम जन्म ८ चैत्र, संवत् १९१५ (१८५८ ई.) को झेलम जिला के तहसील चकवाल के सैदपुर गाँव (अब पाकिस्तान में) हुआ था। आपके पूर्वज **महाराज रणजीतसिंह** की फौज में थे इसलिए वीरता आपको विरासत में मिली थी। आपके पिता का नाम तारासिंह एवं माता का नाम भाग भरी था।

आपने आरंभ में उर्दू-फारसी पढ़ी। बचपन से ही आप स्वाभिमानी और दृढ़ विचारों के थे। एक बार आपको पाठशाला में प्यास लगी, मौलवी से घर जाकर पानी पीने की इजाजत मांगी, मौलवी ने जूठे मटके से पानी पीने को कहा, आपने न दोबारा मौलवी से घर जाने की इजाजत मांगी और न ही जूठा पानी पीया, सारा दिन प्यासा ही बिता

thearyasamaj.org

दिया। पढ़ने का आपको बहुत शौक था। मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी की पुस्तकों से आपको स्वामी दयानंद जी का पता चला, तभी से आप ने ऋषि दयानंद के सभी ग्रंथों का स्वाध्याय आरंभ कर दिया।

सत्रह वर्ष की उम्र में आप सन् १८७५ ईसवी में **पेशावर** पुलिस में भरती हुए और उन्नति करके सारजेंट बन गए। इन दिनों आपपर 'गीता' का बड़ा प्रभाव था। **दयानंद सरस्वती** से प्रभावित होकर उन्होंने संवत् १९३७ विक्रमी में **पेशावर** में आर्यसमाज की स्थापना की। १७ मई सन् १८८० को उन्होंने **अजमेर** में स्वामी जी से भेंट की। शंकासमाधान के परिणामस्वरूप आप उनके अनन्य भक्त बन गए।

लेखराम जी ने सन् १८८४ में पुलिस की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। अब उनका सारा समय वैदिक धर्मप्रचार में लगने लगा। कादियाँ के अहमदियों ने हिंदू धर्म के विरुद्ध कई पुस्तकें लिखी थीं। लेखराम जी ने उनका जोरदार खंडन किया।

स्वामी दयानंद का जीवनचरित लिखने के उद्देश्य से उनके जीवनसंबंधी घटनाएँ इकट्ठी करने के सिलसिले में उन्हें भारत के बहुसंख्यक स्थानों का दौरा करना पड़ा। इस कारण उनका नाम 'आर्य मुसाफिर' पड़ गया। पं. लेखराम हिंदुओं को मुसलमान होने से बचाते थे। एक कट्टर मुसलमान ने ३ मार्च सन् १८९७ को ईद के दिन, 'शुद्धि' कराने के बहाने, धोखे से **लाहौर** में उनकी हत्या कर डाली।

जयपुर में एक बंगाली सज्जन ने पंडित जी से एक प्रश्न किया था की आकाश भी व्यापक हैं और ब्रह्म भी, दो व्यापक किस प्रकार एक साथ रह सकते हैं? पंडित जी से उत्तर नहीं बन पाया था। पंडित जी ने स्वामी दयानंद से वही प्रश्न पूछा, स्वामी जी ने एक पत्थर उठाकर कहा की इसमें अग्नि व्यापक है या नहीं? मैंने कहा कि व्यापक है, फिर कहा कि क्या मिट्टी व्यापक है। फिर कहा कि क्या जल व्यापक है? मैंने कहा कि व्यापक है? परन्तु सभी इसमें व्यापक हैं, फिर कहा कि क्या आकाश और वायु? मैंने कहा कि व्यापक हैं, फिर कहा कि क्या जल व्यापक है? मैंने कहा कि व्यापक है। फिर स्वामी जी बोले देखो, कितनी चीजें हैं परन्तु सभी इसमें व्यापक हैं। वास्तव में बात यही है कि जो जिससे सूक्ष्म होती है वह उसमें व्यापक होजाती है। ब्रह्म चूंकि सबसे अति सूक्ष्म है इसलिए वह सर्वव्यापक है। यह उत्तर सुनकर पंडित जी की जिज्ञासा शांत होगयी। आगे पंडित जी ने पूछा कि जीव ब्रह्म की भिन्नता में कोई वेद प्रमाण बतायें, स्वामी जी ने कहा यजुर्वेद का ४०वां अध्याय सारा जीव ब्रह्म का भेद बतलाता है। इस प्रकार अपनी शंकाओं का समाधान कर पंडित जी वापस आकार वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में लग गए। शंकासमाधान के परिणामस्वरूप वे स्वामी जी के अनन्य भक्त बन गए। पंडित लेखराम ने सन् १८८४ में पुलिस की नौकरी से अपनी स्पष्टवादिता एवं अपने मुस्लिम अधिकारियों के अहसहयोग के कारण छोड़ दी। अब उनका सारा समय वैदिक धर्मप्रचार में लगने लगा।

शुद्धि के रण में

कोट छुट्टा डेरा गाजीखान (अब पाकिस्तान)में कुछ हिन्दू युवक मुसलमान बनने जा रहे थे। पंडित जी के व्याखान सुनने पर ऐसा रंग चढा कि आर्य बन गए और इस्लाम को तिलांजलि दे दी, इनके नाम थे महाशय चोखानंद, श्री छबीलदास व महाशय खूबचंद जी, जब तीनों आर्य बन गए तो हिन्दुओं ने उनका सामाजिक बहिष्कार कर दिया, कुछ समय के बाद छबीलदास की माता का देहांत हो गया। उनकी अर्थी को उठाने वाले केवल ये

thearyasamaj.org

तीन ही थे। महाशय खूबचंद की माता उन्हें वापस ले गयी। आप कमरे का ताला तोड़ कर वापिस संस्कार में आ मिले, तीनों युवकों ने वैदिक संस्कार से दाह कर्म किया। पौराणिकों ने एक चाल चली, यह प्रसिद्ध कर दिया कि आर्यों ने माता के शव को भूनकर खा लिया है। ये तीनों युवक मुसलमान बन जाते तो हिन्दुओं को कोई फरक नहीं पड़ता था परन्तु पंडित लेखराम की कृपा से वैदिकधर्मी बन गए। इस प्रकार की मानसिकता के कारण तो हिन्दू आज भी गुलामी की मानसिकता में जी रहे हैं।

जम्मू के श्री ठाकुरदास मुसलमान होने जा रहे थे। पंडित जी उनसे जम्मू जाकर मिले और उन्हें मुसलमान होने से बचा लिया।

१८९१ में हैदराबाद सिंध के श्रीमंत सूर्यमल की संतान ने इस्लाम मत स्वीकार करने का मन बना लिया। पंडित पूर्णानंद जी को लेकर आप हैदराबाद पहुंचे। उस धनी परिवार के लड़के पंडित जी से मिलने के लिए तैयार नहीं थे। पर आप कहां मानने वाले थे। चार बार सेठ जी के पुत्र मेवाराम जी से मिलकर यह आग्रह किया की मौल्वियों से उनका शास्त्रार्थ करवा दें मौलवी सय्यद मुहम्मद अली शाह को तो प्रथम बार में ही निरुत्तर कर दिया, उसके बाद चार और मौलिवयों से पत्रों से विचार किया। आपने उनके सम्मुख मुसलमान मौल्वियों को हराकर उनकी धर्म रक्षा की।

वही सिंध में पडित जी को पता चला कि कुछ युवक ईसाई बनने वाले हैं। आप वहा पहुच गए और अपने भाषण से वैदिक धर्म के विषय में प्रकाश डाला, एक पुस्तक आदम और हव्वा पर लिखकर बांटी जिससे कई युवक ईसाई होने से बच गए।

गंगोह जिला सहारनपुर को आर्यसमाज की स्थापना पंडित जी से दीक्षा लेकर कुछ आर्यों ने १८८५ में करी थी। कुछ वर्ष पहले तीन अग्रवाल भाई पतित होकर मुसलमान बन गए थे। आर्य समाज ने १८९४ में उन्हें शुद्ध करके वापिस वैदिक धर्मी बना दिया, उनके पिता ने उनके शुद्धि में शामिल होने से मना किया पर वे नहीं माने, पिता ने बिरादरी का साथ दिया, उनकी पुत्र से बातचीत बंद हो गयी। पर रेहतुलाल जी कहाँ माननेवाले थे उनका कहना था गृह त्यागकर सकता हूं पर आर्यसमाज नहीं छोड़ सकता इस प्रकार पंडित लेखराम के तप का प्रभाव था की उनके शिष्यों में भी वैदिक सिद्धांत की रक्षा हेतु भावना कूट-कूट कर भरी थी।

घासीपुर जिला मुज्जफरनगर में कुछ चौधरी मुसलमान बनने जा रहे थे। पंडित जी एक तय की गयी तिथि को पहुँच गए। उनकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी किन्तु मूंछे भी बढ़ी हुई थीं। एक मौलाना ने उन्हें मुसलमान समझा और पूछा क्योंकि जी यह दाढ़ी तो ठीक है पर इन मूछों का क्या राज है। पंडित जी बोले दाढ़ी तो बकरे की होती है मुछें तो शेर की होती हैं। मौलाना समझ गया कि यह व्यक्ति मुस्लमान नहीं हैं। जब पंडित जी प्रचार से वापिस आये तो उन्हें पता चला की उनका पुत्र बीमार है। तभी उन्हें पता चला कि मुस्तफाबाद में पांच हिन्दू मुस्लमान होने वाले हैं। आप घर जाकर दो घंटे में वापिस आ गए और मुस्तफाबाद के लिए निकल गए। अपने कहा कि मुझे अपने एक पुत्र से जाति के पांच पुत्र अधिक प्यारे हैं। पीछे से आपका सवा साल का इकलोता पुत्र है। तभी उन्हें पता चला कि उनका पुत्र चल बसा पंडित जी के पास शोक करने का समय कहाँ था। आप वापिस आकार वेद प्रचार के लिए वजीराबाद चले गए।

पंडित जी और गुलाम मिर्जा अहमद

पंडित जी के काल में कादियान, जिला गुरूदासपुर पंजाब में इस्लाम के एक नए मत की वृद्धि हुई जिसकी स्थापना मिर्जा गुलाम अहमद ने

thearyasamaj.org

करी थी। इस्लाम के मानने वाले मुहम्मद साहिब को आखिरी पैगम्बर घोषित कर दिया तथा अपने नवीन मत को चलाने के लिए नई नई भविष्यवाणियां और इल्हामी का ढोल पीटने लगा।

मिर्जा अपनी कुटिल नीतियों से मासूम हिन्दुओं को बेवकूफ बनाने की चेष्टा कर रहा था पर पंडित लेखराम जैसे रणवीर के रहते उसकी दाल नहीं गली।

पंडित जी ने सत्य असत्य का निर्णय करने केलिए मिर्जा के आगे दो प्रश्न रखे।

१. पहले मिर्जा जी अपने इल्हामी खुदा से धारावाही संस्कृत बोलना सीख कर आर्यसमाज के दो सुयोग्य विद्वाना पंडित देवदत्त शास्त्री व पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा का संस्कृत वार्तालाप में नाक में दम कर दे।

२. ६ दर्शनों में से सिर्फ तीन के आर्ष भाष्य मिलते हैं। शेष तीन के अनुवाद मिर्जा जी अपने खुदा से मंगवा लें तो मैं मिर्जा के मत को स्वीकार कर लूँगा।

पंडित जी ने उससे पत्र लिखना जारी रखा, तंग आकर मिर्जा ने लिखा कि यहीं कादियान में आकर क्यों नहीं चमत्कार देख लेते, सोचा था कि न पंडित जी का कादियान आना होगा और बला भी टल जाएगी, पर पंडित जी अपनी धुन के पक्के थे मिर्जा गुलाम अहमद की कोठी पर कादियान पहुँच गए। दो मास तक पंडित जी कादियन में रहे पर मिर्जा गुलाम अहमद कोई भी चमत्कार नहीं दिखा सका, इस खीज से आर्यसमाज और पंडित लेखराम को अपना कट्टर दुश्मन मानकर मिर्जा ने आर्यसमाज के विरुद्ध दुष्प्रचार आरंभ कर दिया, मिर्जा ने ब्राहिने अहमदिया नामक पुस्तक चंदा मांगकर छपवाई, पंडित जी ने उसका उत्तर तकज़ीब ब्राहिने अहमदिया लिखकर दिया, मिर्जा ने सुरमाये चश्मे आर्या (आर्यों की आंख का सुरमा) लिखा जिसका पंडित जी ने उत्तर नुस्खाये खब्ते अहमदिया (अहमदी खब्त का इलाज) लिखकर दिया, मिर्जा ने सुरमाये चश्मे आर्या में यह भविष्यवाणी करी कि एक वर्ष के भीतर पंडित जी की मौत हो जाएगी, मिर्जा की यह भविष्यवाणी गलत निकली और पंडित जी इस बात के ११ वर्ष बाद तक जीवित रहे।

पंडित जी की तपस्या से लाखों हिन्दू युवक मुस्लमान होने से बच गए।

पंडित जी का अमर बलिदान

मार्च १८९७ में एक व्यक्ति पंडित लेखराम के पास आया। उसका कहना था कि वो पहले हिन्दू था बाद में मुसलमान होगया। अब फिर से शुद्ध होकर हिन्दू बनना चाहा है। वह पंडित जी के घर में ही रहने लगा और वहीं भोजन करने लगा ६ मार्च (१८९७) को पंडित जी घर में स्वामी दयानंद के जीवन चरित्र पर कार्य कर रहे थे। तभी उन्होंने एक अंगड़ाई ली कि उस दुष्ट ने पंडित जी को छुरा मार दिया और भाग गया। पंडित जी को हस्पताल लेकर जाया गया जहाँ रात को दो बजे उन्होंने प्राण त्याग दिए, पंडित जी को अपने प्राणों की चिंता नहीं थी उन्हें चिंता थी तो वैदिक धर्म की। महात्मा मुंशीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द) के साथ उनका गहरा सम्बन्ध था। अन्तिम समय में भी महात्मा जी उनके पास था।

पाठकों की प्रतिक्रिया

मान्यवर सम्पादक महोदय!

सादर नमस्ते।

सुधारक जनवरी २०१२ के आपके सम्पादकीय में देशभक्त नत्थूराम गोडसे को हत्यारा लिखा गया है। यह अनुचित है। क्योंकि हत्यारा वह होता है जो अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु किसी निरपराध की हत्या करता है। केवल किसी मनुष्य को मारना ही यदि हत्या होती हो तो राम-कृष्ण आदि महापुरुष तथा सैनिक भी हत्यारे कहे जायेंगे। निम्नलिखित सन्दर्भ देखने चाहियें?

प्रेषक

प्रो डॉ० सेवाराम आर्य त्यागी

मुण्डेट (मंगलौर हरद्वार)

thearyasamaj.org

आर्यसमाज का कायाकल्प

O स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, भारत-नेपाल परिक्रमावासी,

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८७५ में आर्यसमाज नामक संस्था की स्थापना की, जिसने भारत के इतिहास की धारा ही बदल दी, समाज सुधार, देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

महर्षि ने अपने जीवन का बलिदान भी १८८३ ई. में अजमेर में दिया। मध्य के ८ वर्ष में उनकी प्रेरणा से आर्यसमाज भारत के विभिन्न नगरों में स्थापित हुए।

जब बहुत से आर्यसमाज स्थापित हो गये तो सबसे पहले राजस्थान में प्रांतीय सभा बनी, फिर अन्य प्रान्तों में भी, फिर १९०८ ई. में सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि स्थापित हुई। इसकी शाखाएँ बाहर देशों में भी देश, काल, परिस्थिति अनुसार निर्विघ्न चल रही हैं। विश्व आर्य सम्मेलन भी होते रहते हैं, विदेशों और भारत में भी। गुरुकुल, वानप्रस्थ आश्रम, संन्यास आश्रम हैं तो सही पर सभी अपने आप में सर्वतंत्र, स्वतंत्र। कोई भी किसी के अनुशासन में नहीं। आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति देख, अब इस समय वानप्रस्थी, संन्यासी भी नहीं बन रहे हैं, आर्यजन जो वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करे खोजने पर भी नहीं मिलेंगे, आनेवाले भविष्य में।

जो हैं वे भी वृद्ध हो रहे हैं, यात्रा नहीं कर सकते, न निवास, न भोजन, न वस्त्र, न दवा, न सेवा करनेवाला कोई, घर तो पहले ही छोड़ आये हैं उनसे भी नहीं पट रही, उनका तो कहना है कि जिन्दगी तो आर्यसमाज में गुजारी, अब मरने को हमारे घर आये हो? अब हाल ये है न घर के रहे ना घाट के। भुक्तभोगी बताते हैं कि पहले योग्य विद्वान् बनो, फिर वानप्रस्थ संन्यासी बनो, यहाँ भी एकाधिकारी नहीं चाहते कि कोई और भी भगवाधारी हमारे सिवा हो।

पहले गुरुकुल, फिर गृहस्थ, 50 वर्ष तक 75 वर्ष की अवस्था तक वानप्रस्थी, इतनी उम्र तक तो सभी जी नहीं पाते तो जीवेम शरद:शतम् की तो बात ही कल्पना की रही। क्या सभी वानप्रस्थी जो गृहस्थ में समस्याओं के समाधान में जूझते रहे, 50 वर्ष के होगये, अब कब स्वाध्याय में 25 वर्ष लगावें, इतनी तो आयु भी नहीं बची, आगे की बात परमात्मा जाने।

आश्रम व्यवस्था

25 वर्ष विद्याध्ययन गुरुकुल में, 25 वर्ष गृहस्थ आश्रम, पिताजी को गृहस्थ से मुक्त कर स्वयं गृहस्थी बन वानप्रस्थ के लिए व्यवस्था करना, यदि 75 वर्ष से अधिक उम्र हो तो संन्यास लेना ये क्यों? इसलिए कि देश में बेकारी ना रहे, अपनी गृहस्थी में जो काम रोजी-रोटी के लिए किया जाता है उसे संभाल लेना, इससे नौकरी के लिये दर-दर भटकना ना पड़े।

आशा की एक किरण, महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारी परोपकारिणी सभा, अजमेर में जिसने वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम बना हर प्रकार की सुविधायें यहाँ है, जीते जी, मरने के बाद, सड़क पार श्मशान है वहाँ अन्येष्टि कर देना सर्व सुविधाओं के साथ वैदिक पद्धति से हो जाता है, यदि घर ना जाना चाहे कोई तो, वैसे घर ही जाना चाहते हैं दोनों आश्रमी, घर जाते हैं तो उपयोगी सामान घर वालों को दे दिया जाता है, ना जावें तो संस्था में काम आ जाता है।

शेष, सभी, जन्मधाम टंकारा (जिला-मौरवी) गुजरात में बड़ी-बड़ी मन्जिलों वाले मकान पुराने राजमहल में हैं पर वानप्रस्थ, संन्यास आश्रम नहीं। सत्यार्थप्रकाश प्रकाशनारम्भ धाम, उदयपुर में भी ऐसी व्यवस्था नहीं, हाँ मोहन आश्रम हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में दोनों आश्रम के लिए व्यवस्था है।

thearyasamaj.org

वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर में तो नि:शुल्क कुछ भी नहीं। सेवानिवृत्त उद्योगपति, सरकारी कर्मचारी सैकड़ों कक्ष होते भी सभी सशुल्क ही हैं, गीताभवन, स्वयंसमिति संचालित आश्रम, संन्यास आश्रम-गाजियाबाद, यमुना नगर की अपनी अपनी व्यवस्थायें है। पौराणिक तीर्थ स्थानों में भी वैदिक आश्रम हैं, पर वहाँ भी सीमित है सब कुछ। सब कुछ संस्थायें ही करती हैं या व्यक्ति भी व्यक्तिगत रूप से भी, मूल्यांकन करें तो सब कुछ पता चल जाएगा कि व्यक्तिगत भी बहुत कुछ हो रहा है। एक एक व्यक्ति आर्यसमाज के सेवक, सामान्य गृहस्थी भी कभी कभी अच्छे अच्छे पौराणिकों को शास्त्रार्थ में धूल चटा देते हैं। इन्हें सब तो नहीं ये सूचनायें आर्य पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित नहीं होती हैं। व्यक्ति अपने विचार हस्तलिखित भी रखते ही हैं, कोई कोई।

अभी, वानप्रस्थी, संन्यासियों की संख्या घटती जा रही है, यह संख्या बढ़ना जरूरी है। एक वर्ग प्रवचनकर्ताओं का भी है, इनमें अधिकांश सरकारी कर्मचारी, जो अवकाश की सुविधा में या सेवानिवृत्त हैं, जो अच्छे विचारक हैं, ऐसों में ऐसे भी हैं जो शास्त्रों के ज्ञाता है, जो सरकारी कर्मचारी नहीं हैं और जिनकी जीविका उपदेश देना ही है/ यह भी देखा जा रहा है, कुछ सचमुच ही व्यापारी हैं जो अपने विचार आर्य पत्र पत्रिकाओं में भी प्रकाशित करने के लिये भेजते हैं जो उपयोगी, सामयिक होते हैं।

आश्रमों में रहने वाले कुछ ऐसे भी हैं जो बाहर नहीं जाते, जिज्ञासुओं के लिए शिविर अपने यहाँ लगाते हैं। सबसे जोरदार हमारे यहाँ भजनीक, जो भजनोपदेशक बनते हैं, धीरे-धीरे ये प्रवचनकर्त्ता बनकर भजन से किनारा तो नहीं करते पर प्रसंगवश ही भजन सुनाते हैं मध्य में कभी कभी। इनकी तो शान ही निराली है, सुनने को मिलता है, यह हजारों की उपस्थितिवाला दृश्य, श्रव्य कार्यक्रम, जिसके चलचित्र भी बनाये जाते हैं जो बाद में भी सुन जाते है, ये बिकते हैं, खरीदकर श्रोता ले भी जाते हैं, सुनते-सुनाते, देखते-दिखाते भी हैं। ऐसे ही धर्म दीवानों ने ही आर्य समाज को यहाँ तक पहुंचाया है जो जीवन बलिदान करके भी/गुजरात की स्थिति यह है कि दीपक के नीचे अंधेरा है सबसे कम प्रचार है।

प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इसी जन्मभूमि गुजरात में हजारों जनता के समक्ष श्रद्धाञ्जलि दी भावपूर्ण शब्दों में, जिन्हें सुन श्रोताओं की आखें नम हो गई दिनांक 20.02.2012 के दिन हजारों की उपस्थिति में कहा था कि मैं आर्यसमाज को आपसे ज्यादा जानता हूँ। अपनी बात को समाप्त करने से पहले बताया कि महान् क्रान्तिकारी निर्माता, संस्कृत विशेषज्ञ-स्वामी दयानन्द के परमप्रिय शिष्य पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा जो आजीवन और अन्तिम समय विदेश में ही रहे, वहीं अन्तिम श्वास लिया स्विजरलैण्ड में। उनके अवशेष भारत में ले आने का सौभाग्य मुझे (नरेन्द्र मोदी) को मिला है। आप भी उनके जन्म स्थान माण्डवी समुद्र किनारे गुजरात शासन द्वारा बनाया गया श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा क्रान्तिकारी तीर्थ स्थल देख जीवन को धन्य करें।

गुजरात में 1857 के क्रान्तिकारियों को बड़ी संख्या में अपने यहाँ मठ-मन्दिरों में महन्तों के रूप में शरण दी। ऐसो की संख्या बहुत ज्यादा है। गुजरात के ही एक और क्रान्तिकारी राणा सरदारसिंह जो फ्रांस में रह कर क्रांति का विदेश से ही संचालन कर रहे थे, सिद्धान्तवादी आर्यपुरुष, उनके नाम पर वहाँ राणा सरदारसिंह विश्वविद्यालय भी है। उनके वंशज अभी भी लीमडी नामक स्थान पर सेवा कार्य कर रहे है। जहाँ भारत के राष्ट्र पुरुष उनके अतिथि रहते आये हैं।

श्रोताओं की भीड़ भजनिकों से, मंच की शोभा भी पीताम्बरधारी वानप्रस्थियों और भगवा वस्त्रधारी संन्यासियों से होती है। अधिकारी तो रहते

thearyasamaj.org

ही हैं फिर ये दोनों चाहे वेद शास्त्र से अनभिज्ञ होकर साधारण ज्ञानी ही क्यों न हों।

वानप्रस्थी, संन्यासी कहाँ रहे, चलते चलते रहें पर कब तक? समस्या का हल है कि भारत और बाहर के आर्यसमाजों, गुरुकुलों में एक एक वानप्रस्थी या संन्यासी रहे, एक बात और, इन्हें एक निश्चित समय पर स्थान्तरित भी एक से दूसरे स्थान पर किया जाता रहे ताकि स्वेच्छाचारिता से बचा जा सके।

बौद्धकाल की तरह धर्म परिषदें भी होती रहें जिनमें शांत भाव से भविष्य की योजना भी बने। लोगों से उनके व्यक्तिगत सुझाव भी मंगाये जावें ताकि खर्च कम और लाभ अधिक होता रहे, ये सुझाव लिखित में, डाक से भी मंगाये जा सकते है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती से संबंधित जन्म स्थान टंकारा सभी कुछ दिल्लीवालों के हाथों में, सत्यार्थप्रकाश प्रकाशनारम्भ धाम-उदयपुर एक वर्ग विशेष के ही नियंत्रण में, अजमेर निर्वाण धाम विवादित, मोहन आश्रम हरिद्वार प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभी संचालित, स्मृति भवन जोधपुर व्यक्ति विशेष के नियंत्रण में, महर्षि दयानन्द स्मृति सदन (होडल-पलवल के मध्य) हरियाणा, अमेरिका के प्रवासी भारतीयों के वर्चस्व में है, सभी गतिविधियाँ, टंकारा, उदयपुर, अजमेर में वार्षिक मेले होते हैं। मथुरा के गुरु विरजानन्द आश्रम में सर्व सुविधा होते हुए भी निष्क्रिय, विरजानन्द कुटी आसमान छूती भी निर्जनता के साये में, कोई गतिविधि नहीं होती वर्ष भर में भी।

सभी प्रान्तों में प्रतिनिधि सभाएँ सक्रिय, अपने अपने मुख पत्र भी निकालती हैं, हिन्दी में, साथ ही अपनी अपनी प्रांतीय भाषाओं में भी।

कुंवर सुखलाल जी, आर्य मुसाफिर ने कभी कहा था- जिन्हें संसार में संसार का उपकार करना था, बड़े गौर से सुन रहा था जमाना, वही सो गये दास्तां कहते-कहते।

महात्मा गाँधी जी ने कहा था-आर्यसमाज वाले सभी से सैद्धान्तिक प्रचार के लिए संघर्ष करते हैं जब कोई नहीं मिलता तो, आपस में ही लड़ते-झगड़ते देखे सुने जाते हैं जैसा व्यायामशालाओं में होता है।

स्वामी दयानन्द स्वयं पौराणिक मन्दिरों में भी निवास करते थे, अजमेर के पास पुष्कर में ब्रह्माजी के मन्दिर में भी एक कमरे में रहे थे वहाँ शिलालेख लगा है अभी भी, और भी कहीं रहे ही होंगे। आर्यसमाज मन्दिर तो बाद में बने, सत्संग भवन, ऐसे भी हैं काबा और बुतखाना की एक ही दीवार है। मेड़ता में ऐसा ही है, नांद्रा, खरगोन (मध्य प्रदेश) में भी/सारा भारत क्षेत्र विशेष को छोड़ मांसाहारी है। कहते हैं कि खान-पान का धर्म से क्या संबंध।

शुद्ध शाकाहारी, व्यसनमुक्त, समाज सुधारक पर यहाँ ऐसे भी संन्यासी हैं जो विशुद्ध शाकाहारी नहीं हैं विशेषकर रामकृष्ण मिशन वाले। एक संस्था और है हिन्दूवादी, गोभक्षक, मांसाहारी, पाखण्डी, व्यसनी सभी हिन्दू, ये आर्यसमाज के सदस्य बनते हैं, संस्थाओं के सदस्यता शुल्क भी देते हैं फिर निर्वाचन में बहुमत के आधार पर सैद्धान्तिक आर्यसमाजियों को निकाल बहार कर देते हैं। आर्यसमाज मन्दिरों उसकी संस्थाओं में फिर गणेश उत्सव, नवरात्रि आयोजन होने लगते हैं। इनका कहना है कि आर्यसमाज तो मर रहा है इनकी सम्पत्ति के उत्तराधिकारी तो हम ही हैं।

आर्यसमाज में गुणवत्ता औरों में संख्या बल। जैन धर्म, ईश्वर की सत्ता नहीं मानता, सम्प्रदाय कोई सा भी क्यों नहीं हो, दिगम्बर जैन राष्ट्र संत तरुण मुनि कडवे प्रवचन देते हैं। समाज सुधार के लिए सभी लोग सुनते हैं, पढ़ते भी हैं और सीडी में देखते भी हैं। श्वेताम्बर जैनों में भी मूर्ति पूजक तो हैं ही, साधुमार्गी भी, ऐसे साधुमार्गी बरसों पहले ये

thearyasamaj.org

आर्यसमाज को आर्थिक सहयोग, सदस्यता, अधिकारी, दानदाता भी हैं ऐसे जिन्होंने आर्यसमाज मन्दिर व्यक्तिगत भी बना दिये हैं। ऐसा आर्यसमाज मन्दिर गरोठ, जिला-मन्दसौर (मध्यप्रदेश) में बना है। गुजरात में निरात सम्प्रदाय, मूर्तिपूजक नहीं है आर्यसमाज के समकक्ष है, आर्यसमाज का सहयोगी भी। हिन्दुओं में दादूपंथी, रामस्नेही, राधास्वामी, कबीरपंथी, सिक्ख, स्वामीनारायण वाले आरम्भ में मूर्तिपूजक नहीं थे पर अब धीरे-धीरे अपना रास्ता छोड़ रहे हैं। संतों महन्तों की किसी ना किसी रूप मे मूर्ति पूजा चल रही है। गायत्री परिवार में 24 अवतारों की मूर्तियाँ लगने लग गयी हैं। आचार्य श्रीराम शर्मा देवी भगवती की भी प्रज्ञा पीठ शक्तिपीठ के रूप में, इन्होंने तो प्रज्ञा पुराण भी बना लिया है, कथा वार्ता भी करते हैं। गायत्री फोटो से आरंभ करके, जो पहले आर्यसमाज में थे स्वामी सत्यानन्द जी (जैन धर्मी) जिन्होंने श्रीमद् दयानन्द प्रकाश लिखा, ओजस्वी लेखक, वक्ता भी रहे फिर मन में आया कि रमन्ते रामः का भी अर्थ रमण करने वाला परमात्मा का नाम हो सकता है इसका भी उपयोग ओ३म् की तरह होना चाहिए, पर आर्यसमाज ने सहमति नहीं दी। तब इन्होंने श्रीराम शरणम् सम्प्रदाय अलग ही बना लिया। श्री पण्डित सुधांशु जी को लगा कि आर्यसमाज में तो उपस्थिति उंगलियों पर गिनने जितनी है, अच्छा हो कि प्रवचन कला का उपयोग स्वतंत्र रूप से किया जाये, तो इनका भी सब कुछ अलग ही चल रहा है। ये आर्यसमाज का नाम नहीं लेते, बस इतना ही अन्तर है, शेष सभी कुछ आर्यसमाज जैसा ही है।

सुधांशु जी ने वृद्ध आश्रम खोले हैं, श्रीराम शरणम् वालों ने व्यसनमुक्ति का अभियान जोरों से चला रखा है, यहाँ तक कि वनवासी क्षेत्र में भी इनका प्रभाव दिखाई देता है। सब जीते जी की माया है, संस्था ट्रस्टियों के हवाले जो सारे ही सिद्धान्त विरोधी और पौराणिक होकर अंधविश्वासी ही होते है अपने मन की करते हुए विरोधी गतिविधि चलाते है, उपस्थिति भी उन्हीं की होती है। तीनों ही आर्यसमाज का नाम भूलकर भी नहीं लेते, कोई ऐसा हो तो दर्शक नाराज हो जावे। तब ना आर्थिक सहयोग, ना उपस्थिति, कुछ भी नहीं। तो फिर, जो पैसा दे वही ट्रस्टी। जिसकी दृष्टि बिगड़ी सृष्टि का भी पतन हो जाता है।

आर्यसमाज में एक थे श्री विद्यानन्द जी विदेह, पुलिस के उच्च पदस्थ अधिकारी, समय, नियम के एकदम पक्के, हाँ वाणी में शहद से मीठापन आर्यसमाजी तो थे ही, अपनी उपमा आप ही रहे। सेवानिवृत्त होने के पश्चात् वैदिक धर्म प्रचार में लगे, सन्तानों को भी सुयोग्य बनाया, एक अच्छे संस्कृत के विद्वान् दिल्ली के विदेह आश्रम के ईमानदारी से संचालक, दूसरे अहमदाबाद गुजरात से हिन्दी दैनिक के संचालक, बाकी के भी पता नहीं क्या कर रहे हैं, विदेह जी स्वतंत्र चिंतनशील, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने कुछ समय के लिए प्रतिबंधित भी कर दिया था, ग्रंथ लिखे छपवाये भी, वेदभाष्य भी, कुछ अंश में जैसा हो सका किया। अपनी संस्था का मुख पत्र भी निकालते रहे थे, विदेश प्रवास भी कर आये थे। इनके अनुयायी भी अपने को नामांत में विदेह ही लिखते हैं।

आर्यसमाज छोड़ देने के बाद स्वामी सत्यानन्द, आचार्य श्रीराम शर्मा ने स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज का अपने प्रकाशनों में विरोध बिल्कुल भी नहीं किया, मौन स्वीकृति लक्षणम्। अभी तो सुधांशु जी महाराज श्री का साहित्य आर्यसमाज का नाम लेते भी, ना लेते भी आर्यसमाज जस का तस ही है न वे मूर्ति पूजा करवाते हैं, न व्यक्ति पूजा ही, ना अपने को महिमा मण्डित हीं, सब कुछ स्वयं की प्रतिभा का प्रकाशन। आर्यसमाज में एक दल वेश परिवार का है ये भी अपने को सभी वेश ही नामांत में लिखते हैं। आर्यसमाज में महिलाओं द्वारा भजन प्रवचन करने का सहयोग भी

thearyasamaj.org

है। कहीं कहीं आर्यसमाज वाले भी प्रचारकों से कह देते हैं कि यहाँ खण्डन मत करना, लोग नाराज हो जायेंगे।

क्या प्रचारकों की संतान भी प्रचारक है? हाँ है तो ऐसे भी कुछ सर्वश्री पण्डित नरेशदत्त जी आर्य, पं० सत्यपाल जी पथिक, और कुछ तो सपरिवार वाले भी हैं। सबसे ज्यादा प्रचारक हरियाणा वाले, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, अन्य प्रांतों से भी हैं। गुजराती एक भी नहीं, ना तो वानप्रस्थ ना संन्यासी ही। सबसे ज्यादा धनवान् भारत में जो हैं सो गुजराती हैं, शिक्षा, संगठन, स्वयं सुधार, कट्टरता, दान इनकी विशेषता है। अब जन्म जाति वालों ने भी अपनी संस्था का आर्यसमाजीकरण कर दिया है सभी कुछ आर्यसमाज जैसा ही संगठन।

उपर्युक्त वर्णन पुस्तक पढ़कर, सुनकर नहीं, पर स्वयं ही भारत-नेपाल की अर्द्ध शताब्दी परिक्रमा वासी रहकर भुक्तभोगी बनकर ही लिखा है। गुरुकुल शिक्षा, गृहस्थ जीवन में संतानों के संबंध जन्म जाति छोड़कर, उन्हें गुरुकुल शिक्षा दिलाकर और स्वयं वानप्रस्थी और फिर संन्यासी दीक्षा ले प्रवास तो जीवनभर किया और नाम ही प्रवासानन् रख दिया गुरुजी ने बचपन से ही आर्य पत्र-पत्रिकाओं में लेख, यात्रा संस्मरण, पुस्तकों का प्रकाशन, (प्रतिभा सम्मान) समारोहों में रुचि १९५४ से आज तक। देश की स्वतंत्रता में भूमिगत स्वतंत्रता सैनिक की भूमिका, आर्यसमाज के हिन्दी गोरक्षा सत्याग्रह में जेल यात्रा, विश्व हिन्दू परिषद् के लिए भी। संकल्पानन्द पुरस्कार से गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र जी मोदी द्वारा दि. २०.०२.२०१२ को टंकारा में सम्मानित, शाल, प्रतीक चिह्न, १५,०००/- रुपयों से सम्मानित १९२६ में जन्म तब से आज तक बहुत कुछ किया, बहुत कुछ ना कर पाये, अब तो लौकिक छोड़ पारलौकिक ना जाने कब पिंजरा खाली करना पड़े। कहाँ और कैसे कहा जा सकता है। विचार मेरे अपने ही हैं। प्रस्तुति में जीवन में, जीवन रहते सभी के प्रति आभार के साथ जीवन के अन्तिम चौराहे के रास्ते जाते हुए विदा, अलविदा!

पशुपालन एंव डेयरी विभाग हरियाणा बेज ९-१२

सैक्टर-२ पंचकूला हेतु सुझाव

द्वारा-मेजर रतनसिंह यादव (सेवानिवृत्त)
मोबाइल-९०५०३४१००६
C/O स्वास्तिक किरयाणा स्टोर गुड़ियाणी
जिला-रेवाड़ी (तह० कोसली)
Email- Pasudhanhar@rediffmail.com

१. **गोहत्या-गोतस्करी** को गैर जमानती अपराध बनाने के लिए कानून में प्रावधान किया जाये।

२. **न्यायालय बिना** देरी किये निर्णय करें, ताकि गोतस्करों को सबक मिले।

३. **सजा की** अवधि कम से कम १० वर्ष हो। वर्तमान में थोड़ी सी सजा काटकर पुनः गोतस्करी में लग जाते हैं।

४. **जिस वाहन** को गोतस्करी के लिए काम में लाया जाता है, उसे नीलाम कर दिया जाये। (यद्यपि ऐसे वाहन प्रायः चोरी किये होते हैं)

५. **गोतस्कर पुलिस** पर पथराव, फायरिंग, नाका तोड़ना आदि कार्यवाही करके बच निकलते हैं। पुलिस को यह अधिकार दिया जाये कि ईंट का जवाब पत्थर से दिया जाए। ऐसी स्थिति में यदि पुलिस अपराधी की मृत्यु की आशंका से डरकर फायर नहीं करती, और अपराधी बच निकलते हैं।

६. **गाय को** आर्थिक रूप से उपयोगी बनाने हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं-

(क) ऐसे सुविधाजनक हल, बैलगाड़ियाँ तथा सिंचाई हेतु-कुओं से जल निकालने के उपकरण इंजिनियरों द्वारा तैयार किये जायें जो बैलों द्वारा चालित हों। ऊर्जासंकट के इस युग में हमारी बैलों की ऊर्जा का कोई इस्तेमाल नहीं हो पा रहा। बैल की उपयोगिता बढ़ेगी तो गाय का आर्थिक महत्त्व बढ़ेगा।

(ख) ऐसा एक प्रयोग रेवाड़ी जिले के ग्राम डहीना में प्रायोगिक स्तर पर चल रहा है। परिणाम उत्साहवर्धक रहे हैं, अतः किसानों में बैलों के प्रति आकर्षण बढ़ा है।

(ग) रासायनिक खादों के अत्यधिक उपयोग के दुष्परिणामों के फलस्वरूप भूमि की घटती उपजाऊ शक्ति तथा अन्न-फल, सब्जियों में विद्यमान विषैले तत्त्वों का मानव स्वास्थ पर हानिकर-प्रभाव से बचाने के लिए गोबर-गोमूत्र का महत्त्व प्रचारित किया जाये। अन्त में यही कहूँगा-

"चलता रहा क्रम यदि यों ही हमारे विनाश का।
तो अस्त समझो सूर्य भारत भाग्य के आकाश का।।
बाकी रही जो सम्पदा, वह भी न रहने पायेगी।
यह स्वर्ण भारतभूमि बस, मरघटमही बन जायेगी।।"

— राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त

thearyasamaj.org

समाचारप्रभाग

यज्ञ-सत्संग कार्यक्रम

१२.२०.१५ को यज्ञ समिति झज्जर के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह मौ. भट्टी गेट में हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। भारत स्वाभिमान झज्जर की बेटियों-(लताशा, भारती, काजल, मनीषा, पायल, सुमन, गीता, तमन्ना, हर्षिता, रीनु, कशिश, तन्नु, रामभतेरी) ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। श्रीमती सोनिया एंव श्री मुकेश आर्य मुख्य यजमान थे। वैदिक सत्संग मंडल समिति झज्जर के प्रधान पं. रमेशचन्द्र कौशिक ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की । मुख्य अतिथि समाज सेवी नै. ब्र. इन्द्रजीत जी थे।

आर्यसमाज झज्जर के वैदिक विद्वान् आचार्य शतक्रतु जी ने बताया कि प्रत्येक व्यक्ति सुख चाहता है। इस की प्राप्ति होती है- अपनी बुराइयों को दूर करने से तथा दूसरों की बुराइयों को दूर करने में मदद करने से होती है। कार्यक्रम के अध्यक्ष पं. रमेशचन्द्र कौशिक जी ने कहा -माँ की कोख बेटी के लिए सबसे सुरक्षित स्थान माना जाता है। आज वहाँ भी बेटियां सुरक्षित नहीं हैं। तो फिर कहाँ सुरक्षित रहेगी? पं. जयभगवान आर्य ने मधुर प्रेरणादायक भजन रखें। मंचसंचालन श्री विजय आर्य ने किया। कार्यक्रम में प्रवीन आर्य, विवेक गोयल, भगवानसिंह, मा. पनसिहं, नंदराम प्रधान, महाशय रतीराम, शिवनारायण गाबा, ओमप्रकाश यादव, विदुषी कौशल्या भटनागर,कान्ता, अंजु, सुनीती, सेवा, सविता, नन्दनी, रेखा, आरती, योगाचार्य रामनिवास योगार्थी आदि प्रमुख रहे।

प्रवेश-सूचना

सभी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि वैदिक गुरुकुल विद्यापीठ खेरली जिला अलवर (राज०) पिछले चार वर्षों से निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। गुरुकुल में नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश-प्रारम्भ हो गया है। गुरुकुल विद्यापीठ खेरली में गुरुकुल झज्जर से सम्बन्धित महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट आर्षप्रणाली से अध्ययन करवाया जाता है। संस्कृत, वेद, अंगेजी, गणित, विज्ञान, समाजिकज्ञान आदि सभी विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों द्वारा करवाया जाता है। अध्ययन की अच्छी व्यवस्था के साथ ही आत्मिक उन्नति के लिए आर्यकुमार सभा तथा शारीरिक विकास के लिये आर्यवीर दल स्थापित है। जिसमें योगासन, प्राणायाम, दौड़, मल्लयुद्ध (कुश्ती), कबड्डी, लाठी, शूल, खड्ग, मल्लखम्भ , नियुद्धम् आदि के प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था है।

अतः आप सब सज्जनों से अनुरोध है कि अपने क्षेत्र से संस्कृत प्रेमी सुयोग्य छात्रों को प्रवेश हेतु गुरुकुल में भेजने की कृपा करें। प्रवेश ६,७,८ कक्षा में ही प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद होगा।

निवेदक

व्यवस्थापक वेदमुनि (०९५२८५५४५६९)

आचार्य आनन्द मित्र

गुरुकुल खेरली अलवर (राज०)

सम्पर्कसूत्रः- ०८५०४०९३८६३, ०९५४९५६०४२२

thearyasamaj.org

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल झज्जर, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती व स्वामी ओमानन्द सरस्वती के सपनों को साकार करने हेतु गत निन्यानवें वर्षों से मानव-निर्माण, आर्यों का तीर्थ एवं प्रेरणा स्थल तथा वैदिक शिक्षा के आदर्श केन्द्र के रूप में अहर्निश संलग्न है। अतः रोग, नशा, अज्ञान, अन्याय, भय-भ्रम, पाखण्ड, दुराचार, भ्रष्टाचार मुक्त, योग, आध्यात्मशिक्षा, स्वास्थ्य समृद्धि, सद्ज्ञान एवं वैदिक संस्कारों से संस्कारवान् दिव्य सन्तान निर्माण के लिए अपने बालकों को गुरुकुल झज्जर में प्रवेश दिलाने हेतु शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क करें।

१. **विद्यार्थी** पाचवीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए।
२. **प्रवेश** हेतु लिखित एवं मौखिक परीक्षा अप्रैल, मई व जून माह के प्रथम व तीसरे रविवार को होगी।
३. **लिखित** परीक्षा उपर्युक्त उसी दिन मौखिक परीक्षा होगी और दोनों परीक्षाओं के आधार पर विद्यार्थी का प्रवेश होगा।
४. **विद्यार्थी** स्वस्थ, सुशील, सुयोग्य और अनुशासित होना अनिवार्य है।
५. **अधिक** जानकारी के लिए गुरुकुल नियमावली कार्यालय से प्राप्त करें या चलभाष से सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र :- ०९४१६०५५०४४, ०९४१६१२६९७७, ०९४१६६६१०१९
Email- sudharak.@gurukul@gmail.com

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत

(Affiliated with C.B.S.E. New Delhi Code No. 531114) रोहतक (हरि.)

प्रवेश परीक्षा 6 अप्रैल प्रातः 10 बजे

★ प्रविष्ट छात्रों का हॉस्टल में रहना आवश्यक है।
★ संध्या-हवन, योगासन, प्राणायम खेल समन्वित नियमित दिनचर्या और धर्म शिक्षा-द्वारा संस्कारित वातावरण।
★ 10+1, 10+2 में आर्ट, कॉमर्स तथा नॉन मैडिकल संकाय।
★ आर्मी, नेवी तथा एयरफोर्स के लिए भर्ती में प्रशिक्षण ।
★ पुस्तकालय, वाचनालय, कम्प्यूटर तथा विज्ञान की आधुनिक प्रयोगशालाएं।
★ इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स के लिए भाषा प्रयोगशाला।
★ संस्था में स्थापित पं० रामप्रसाद बिस्मिल खेल अकादमी के माध्यम से खेल प्रशिक्षण। प्रशिक्षित कोचों एवं अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों द्वारा समय-समय पर दिशा निर्देश।
★ 6 एकड़ का स्वच्छ तथा रमणीय परिसर।

प्रवेश आरम्भ (4 से 12वीं) प्रोस्पेक्ट उपलब्ध है।

3 K.M. STONE FROM BUS STAND, LADHOT ROAD, ROHTAK (HARYANA)
Contact : 01262-217550, 09992403892, 09467240298, 09416629972

thearyasamaj.org

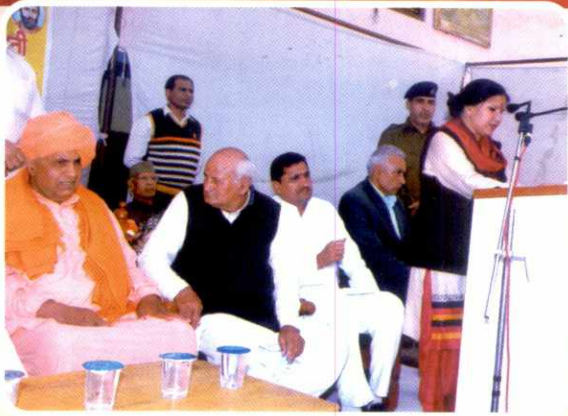

श्रीमती गीता भुक्कल जनता को
सम्बोधित करती हुई।

श्रीमती गीता भुक्कल को साहित्य भेंट करते हुए।
आचार्य विजयपाल।

चौ. दीपेन्द्रसिंह हुड्डा को मांगपत्र देते हुए
आचार्य विजयपाल।

चौ. दीपेन्द्रसिंह हुड्डा जनता को
सम्बोधित करते हुए।

चौ. दीपेन्द्रसिंह हुड्डा को साहित्य भेंट करते हुए
ब्र. चाँदसिंह आर्य।

स्वामी कर्मपाल जी का सम्मान करते हुए
आचार्य विजयपाल और चौ. पूर्णसिंह देशवाल।

thearyas maj.org

स्वामी प्रणवानन्द जी का सम्मान करते हुए
आचार्य विजयपाल और चौ. पूर्ण सिंह देशवाल।

स्वामी देवव्रत जी का सम्मान करते हुए
आचार्य विजयपाल और चौ. पूर्ण सिंह देशवाल।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी का सम्मान करते हुए
आचार्य विजयपाल और चौ. पूर्ण सिंह देशवाल।

डॉ. सुरेन्द्रकुमारजी का सम्मान करते हुए
आचार्य बलदेव जी एवं आचार्य विजयपाल जी।

पं. सत्यपाल पथिक का सम्मान करते हुए आ. बलदेव जी, आ. विजयपाल जी,
स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी देवव्रत जी, डॉ. धर्मपाल देशवाल।

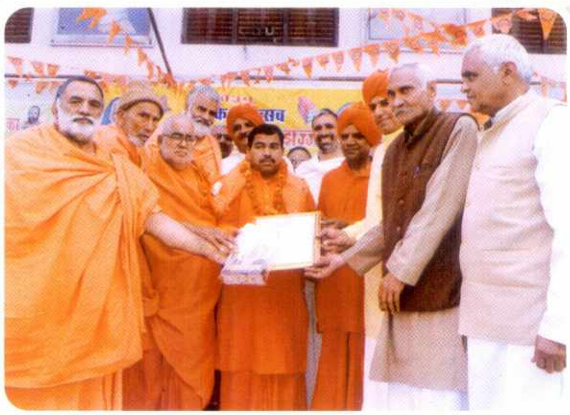

ब्र. कुंजदेवमनीषी का सम्मान करते हुए आ. बलेदव जी,
आ. विजयपाल जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, श्री रामप्रताप आर्य।

thearyasamaj.org

स्वामी सुमेधानन्द जी का स्वागत करते हुए
मा. रामपाल आर्य।

मंचासीन आ. विजयपाल जी, स्वामी सुमेधानन्द जी
एवं स्वामी प्रणवानन्द जी।

स्वामी सुमेधानन्द जी
जनता को सम्बोधित करते हुए।

स्वामी देवव्रत जी
जनता को सम्बोधित करते हुए।

स्वामी प्रणवानन्द जी
जनता को सम्बोधित करते हुए।

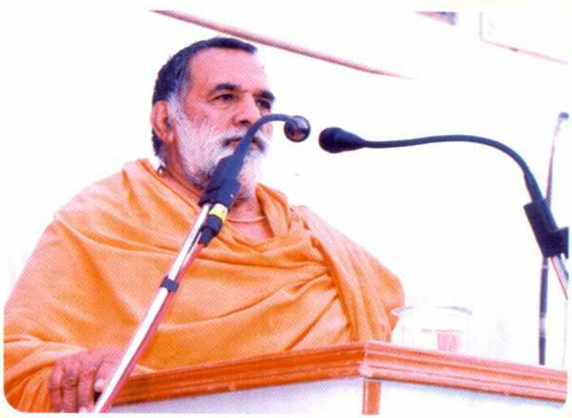

आचार्य विजयपाल जी
जनता को सम्बोधित करते हुए।

thearyasamaj.org

मा. रामपाल आर्य
जनता को सम्बोधित करते हुए।

डॉ. जयभारती
जनता को सम्बोधित करते हुए।

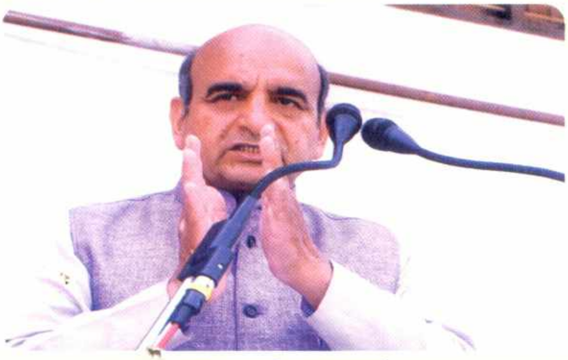

डॉ. बलवीर आचार्य
जनता को सम्बोधित करते हुए।

आचार्य यशपाल जी
जनता को सम्बोधित करते हुए।

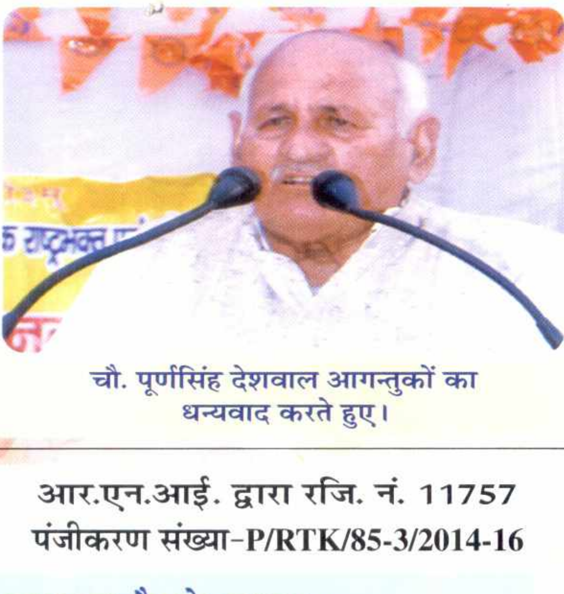

चौ. पूर्णसिंह देशवाल आगन्तुकों का
धन्यवाद करते हुए।

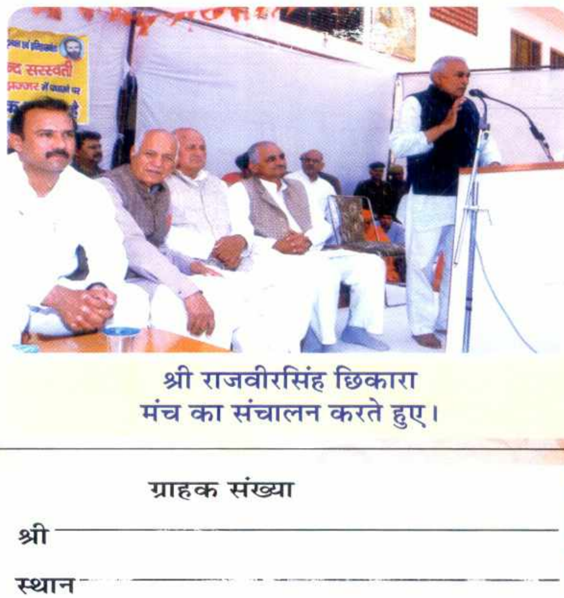

श्री राजवीरसिंह छिकारा
मंच का संचालन करते हुए।

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2014-16

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103

ग्राहक संख्या

श्री ______________________

स्थान ______________________

डा० ______________________

जिला ______________________

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-वेदव्रत शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।